इमारत

अनुसंधान केन्द्र इमारत की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

अंक: 17, वर्ष: 2024-25

अनुसंधान केन्द्र इमारत (आरसीआई)

डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम प्रक्षेपास्त्र समष्टि

पी. ओ. विज्ञान कांचा, हैदराबाद. - 5000 069

अखण्ड देश की गरिमा हिन्दी को, नमन करें हम मिलकर शत-शत ।
हिन्दी का कण-कण अपनाकर, आओ बनाएँ प्रबल इमारत ।।

दूरदर्शिता

सीमांत प्रौद्योगिकियों, बहु-विषयक सक्षमता एवं अग्रसर अवसंरचना का विकास कर अपनी सशस्त्र सेनाओं के लिए निर्देशित प्रक्षेपास्त्र प्रणालियों के विकास में अग्रणी रहना और आत्मनिर्भर बनना।

लक्ष्य

शैक्षणिक संस्थानों एवं उद्योगों के सहयोग से सीमांत प्रौद्योगिकियों के विकास हेतु एक प्रमुख संस्था बनना। व्यावसायिक उत्कृष्टता हेतु मानव संसाधन को पोषित करना। सशस्त्र सेनाओं के लिए निर्देशित प्रक्षेपास्त्र प्रणालियों के प्रवेश एवं उत्पादन हेतु संगठित होना।

गुणवत्ता नीति

- सीमांत प्रौद्योगिकी निर्देशित प्रक्षेपास्त्र प्रणालियों की कल्पना, अभिकल्पना एवं विकास करना।
- अपनी सशस्त्र सेनाओं की आवश्यकताओं को पूरा करना।
- समय पर उत्पादन में अग्रसर रहना।
- नियमित रूप से सक्षमता एवं अवसंरचना की उन्नति द्वारा बढ़त बनाए रखना।
- गुणवत्ता एवं आत्मनिर्भरता की संस्कृति का सतत् पोषण करना।

संपादक दल

संरक्षक

श्री अनिंद्य बिस्वास
विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक

सह - संरक्षक

डॉ पी अनिल कुमार
वैज्ञानिक 'जी'

विशेष आभार

श्रीमती जोइता मुखर्जी
वैज्ञानिक 'जी'

संपादक

श्री काज़िम अहमद
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

श्री सूरज कुमार पांडेय
क. अनुवाद अधिकारी

श्री सचिन कुमार भारद्वाज
क. अनुवाद अधिकारी

शब्द संयोजक

श्री गौतम कुमार महतो
आशुलिपिक ग्रेड-।

छायाचित्र

श्री बोंद्रे बालाजी महादेव
तकनीशियन 'ए'

नोट : इस अंक में व्यक्त विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।
संपादक दल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

तकनीकी अंक: 17, वर्ष: 2024-25

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अनिंद्य बिस्वास
विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक
व अध्यक्ष

डॉ. पी. अनिल कुमार
वै-जी व उपाध्यक्ष

डॉ. एम के गुप्ता
वै-जी व सदस्य सचिव

संतोष कुमार सतनामी
वै-एफ व सदस्य

मनीष नालमवार
वै-एफ व सदस्य

अनीश गोपाल
वै-एफ व सदस्य

पी. अच्युतरामय्या
वै-एफ व सदस्य

मदनलाल कसौटिया
वै-ई व सदस्य

मेहजबीं
वै-डी व सदस्या

एम एम जय बाबू
वरि. लेखा अधिकारी -I

काज़िम अहमद
सहा. निदेशक (रा.भा.)
व सदस्य

रवि रंजन गुप्ता
वै-बी व सदस्य

धनेंद्र त्रिपाठी
तकनिकी अधिकारी 'ए'

गौतम कुमार महतो
आशुलिपिक ग्रेड-I
व सदस्य

सूरज कुमार पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
व सदस्य

सचिन कुमार भारद्वाज
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
व सदस्य

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
Government of India

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि **अनुसंधान केंद्र इमारत** गृह-पत्रिका **'इमारत'** के सत्रहवें नियमित अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिकाएं विचारों को जन सामान्य तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम होती हैं और यदि पत्रिकाओं के महत्व को समझने का प्रयास करें तो हम सहज ही स्वतंत्रता आंदोलन के समय प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओं का आकलन कर सकते हैं। पत्रिकाएं न केवल विचारों का बल्कि भाषा का भी संचार करती हैं तथा भाषा को और अधिक सशक्त एवं परिष्कृत बनाती हैं।

अनुसंधान केंद्र इमारत प्रयोगशाला का प्रयास राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय रहा है। अभी कुछ माह पूर्व 10-11 जनवरी 2025 को प्रयोगशाला में द्वितीय अखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलन 'उन्मेष-2025' का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया। तकनीक की दुनिया में हिंदी को निरंतर प्रायोगिक बनाने और स्थापित करने की प्रक्रिया में गृह-पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। अतः गृह-पत्रिका के 17वें अंक के सभी लेखकों, संपादक मंडल एवं राजभाषा प्रभाग को इस अंक के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 09 मई, 2025

समिर कामत
(डॉ. समिर वी. कामत)

रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली 110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi -110011
दूरभाष / Phone: 011-23011519, 23014350 फैक्स / Fax: 011-23018216 ई-मेल/ E-mail: secydrdo@gov.in

यू राज बाबू
विशिष्ट वैज्ञानिक
महानिदेशक (एम एस एस)

U RAJA BABU
Distinguished Scientist
Director General
(Missile & Strategic Systems)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
501, डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली–110011

Government of India
Ministry of Defence
501, DRDO Bhawan, Rajaji Marg.
New Delhi-110011

संदेश

पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक सुंदरतम माध्यम है और उसी क्रम में **अनुसंधान केंद्र इमारत, हैदराबाद** की गृह-पत्रिका **'इमारत'** के सत्रहवें अंक का प्रकाशन अत्यधिक प्रशंसनीय है। यह सर्वविदित है कि इस वर्ष आरसीआई एवं डीआरडीओ मुख्यालय द्वारा संयुक्त रुप से 'उन्मेष–2025' का आयोजन बड़ी ही सफलतापूर्वक किया गया। यह बड़े ही गौरव का विषय है कि तकनीक के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए उच्च स्तरीय प्रयास किए जा रहे हैं और इन्हीं प्रयासों के फलस्वरुप **उन्मेष** जैसे बड़े आयोजनों को आकार–स्वरुप प्रदान किया गया।

अनुसंधान केंद्र इमारत ने गृह-पत्रिका **'इमारत'** के सत्रहवें अंक में संकलित साहित्यिक कृतियों, पद्य रचनाओं के माध्यम से अपनी प्रयोगशाला के कार्मिकों की साहित्यिक रुचि और प्रतिभा को प्रदर्शित किया है। मैं पत्रिका के लेखकों, कवियों तथा प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके योगदान के लिए बधाई देता हूँ। मेरा विश्वास है कि आगे भी आरसीआई ज्ञानवर्धक एवं रुचिपूर्ण विषयों से सुसज्जित पत्रिकाओं को प्रकाशित करता रहेगा और सभी कार्मिक इसके लिए प्रयासरत रहेंगे।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 09 मई, 2025

यु राज बाबु
(यू राज बाबू)

दूरभाष/ Telephone (O) : 91-11-23010654, 23010910 फैक्स/Fax: 91-11-23014784 ई-मेल / E-mail: dgmss.hqr@gov.in

डॉ मनु कोरुला
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (आर. एण्ड एम.)

Dr. Manu Korulla
Outstanding Scientist &
Director General (R & M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
अनुसंधान तथा विकास संगठन
101, डीआरडीओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली–110011, भारत

Government of India
Ministry of Defence
Defence Research &
Development Organisation
101, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi-110011, India

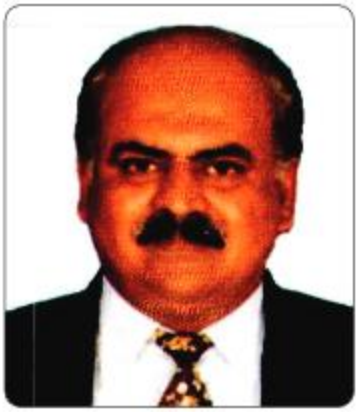

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी है कि **अनुसंधान केंद्र इमारत (आरसीआई), हैदराबाद** विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी राजभाषा हिन्दी की गृह-पत्रिका '**इमारत**' के '**सत्रहवें अंक**' का प्रकाशन कर रहा है। राजभाषा हिंदी की प्रगति के क्षेत्र में यह सराहनीय प्रयास है।

इस पत्रिका के माध्यम से केंद्र में हो रहे वैज्ञानिक, तकनीकी कार्यों एवं उपलब्धियों को हिंदी भाषा में प्रस्तुत कर जन साधारण तक पहुंचाने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी अधिक से अधिक कार्मिक अपना सरकारी कामकाज राजभाषा हिन्दी में करने के लिए प्रेरित होंगे और राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में अपना सक्रिय योगदान देते रहेंगे।

राजभाषा हिन्दी के सर्वाधिक प्रचार प्रसार के लिए आवश्यक है कि पत्रिका में मौलिक लेखों का अधिकाधिक समावेश हो क्योंकि मौलिकता भाषा को और अधिक प्रखर बनाती है। हिन्दी भाषा पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। आशा है कि ग क्षेत्र में स्थित इस केंद्र द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कार्मिकों की लेखन प्रतिभा को और मुखर स्वरुप प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। मैं इस अवसर पर केंद्र के निदेशक सहित पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके इस प्रयास के लिए बधाई देता हूं।

शुभकामनाएं!

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 08 मई, 2025

मनु कोरुला

(डॉ मनु कोरुला)

दूरभाष/ Telephone (O) : 011–23011860 फैक्स/Fax: 011–23015395 ई–मेल / E-mail: dgrm.hqr@gov.in

अनिंद्य बिस्वास
विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक

ANINDYA BISWAS
Distinguished Scientist & Director

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
अनुसंधान केन्द्र इमारत
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्रक्षेपास्त्र समष्टि
विज्ञानकांचा पी. ओ. हैदराबाद-500 069

Government of India, Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
RESEARCH CENTRE IMARAT
Dr. A.P.J. Abdul Kalam Missile Complex
Vignyanakancha P.O., Hyderabad-500 069

संदेश

आरसीआई की पत्रिका 'इमारत' का 17 वां नियमित अंक प्रकाशित हो चुका है, यह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता की बात है। यह अंक विज्ञान साहित्य और राजभाषा कार्यान्वयन में हो रही प्रगति और नवीन विचारों का उत्कृष्ट संग्रह है। इस पत्रिका का उद्देश्य आरसीआई के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में लेखन कार्य हेतु प्रेरित करना है ताकि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हो।

'इमारत' पत्रिका आरसीआई का एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है, जिसका उद्देश्य राजभाषा हिंदी के माध्यम से ज्ञान को साझा करना और नवाचार को बढ़ावा देना है। निश्चित रूप से पाठकों को लेखकों द्वारा रचित सृजनात्मक तथा तकनीकी लेखों को पढ़ने का अवसर प्राप्त होगा। हमारा निरंतर प्रयास है कि यह पत्रिका हमारे सदस्यों और व्यापक पाठक वर्ग के लिए एक मूल्यवान साधन बनी रहे।

आरसीआई राजभाषा हिंदी के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु तत्पर और सजग है। आरसीआई ने गत वर्षों में राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय प्रगति की है और इसी कड़ी में राष्ट्रीय स्तर के द्वितीय अखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलन **'उन्मेष-2025'** का दिनांक 10-11 जनवरी 2025 को सफलतापूर्वक आयोजन किया। जिसमें देश के नामचीन वैज्ञानिक, तकनीकी और शैक्षणिक संस्थानों से प्रतिभागियों ने हिंदी में अपने शोध-पत्रों के साथ शिरकत की। परिणामस्वरूप मुझे आप सभी को यह बताते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष हमारी प्रयोगशाला को राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के तहत भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया गया है। भारत सरकार के किसी भी कार्यालय के लिए यह बहुत गर्व का विषय है।

मैं इस अंक के प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान के लिए संपादकीय टीम और सभी लेखकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। हमें विश्वास है कि इमारत का ये 17वां अंक भी आपको पसंद आएगा और आशा है कि आगामी अंकों में भी लेखकों और पाठकों का सहयोग बना रहेगा।

शुभकामनाएं!

अनिंद्य बिस्वास

दिनांक : 12 मई, 2025

(अनिंद्य बिस्वास)

दूरभाष/ Tel : 040-24306000, 24306001 फैक्स/Fax: 040-24306002 ई-मेल / E-mail: director.rci@gov.in

सुनील शर्मा
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
एवं
निदेशक (डी पी ए आर ओ एंड एम)

Sunil Sharma
OUTSTANDING SCIENTIST
&
DIRECTOR (DPARO&M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अ.स.प.सं. / DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and Organisation & Methods (DPARO&M)
'ए' ब्लॉक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली - 110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi - 110011
दूरभाष/Telephone : 23013248, 23007125
फैक्स / Fax : 23011133, 23013059
दिनांक / Dated: 29-11-2024

संदेश

आरसीआई मिसाइल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य कर रहा है और साथ ही यह प्रयोगशाला हिंदी सेवा में भी अग्रणी है जिसकी झलकियां यहां कुछ दिन पूर्व आयोजित द्वितीय आखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलन '**उन्मेष–2025**' में देखने को मिली हैं। पत्रिकाएं ऐसा माध्यम है जहां साहित्यिक रूचिकर लेखों के अतिरिक्त विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी ज्ञानवर्धक जानकारियां भी मिलती रहती हैं। हिंदी में इस प्रकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखों का लिखा जाना सराहनीय है। इस प्रकार लेखकगण अपनी नई–नई जानकारी को साझा करेंगे तथा पाठकगण इससे लाभान्वित भी होंगे। गृह–पत्रिकाओं के माध्यम से केंद्र की विविध गतिविधियों के बारे में पता चलता है। हमें यह ध्यान रखना है कि हम राजभाषा के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए हिंदी में अधिकाधिक कार्य करें तथा दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां आरसीआई में सक्रियता से संपन्न की जा रही हैं। हिंदी में पत्राचार के साथ–साथ कार्यशालाओं, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों, हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा, संगोष्ठियों आदि का नियमित रुप से आयोजन किया जाता है। यह भी उल्लेखनीय है कि आरसीआई राजभाषा नियम 1976 के नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित हो चुका है।

आरसीआई की गृह–पात्रिका 'इमारत' की रचनाएं अपनी स्तरीय लेखन–शैली एवं कृतियों के लिए सदैव सराहना पाती रही हैं। अत: गृह–पात्रिका 'इमारत' के 17वें अंक में प्रकाशित होने वाले लेख के लेखकों एवं संपादक मंडल को सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं और आशा करता हूँ कि आपका यह प्रयास आगे भी अनवरत रुप से जारी रहेगा।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 9 मई, 2025

(सुनील शर्मा)

ई–मेल / E-mail: sunil-sharma.hqr@gov.in

डॉ. पी. अनिल कुमार
वैज्ञानिक 'जी'
निदेशक, प्रबंध सेवाएँ

Dr. P. Anil Kumar
Scientist 'G'
Director, Management Services

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सं. No. आरसीआई/डीओएमएस/रा.भा./301/01/इमारत-13
भारत सरकार/Government of India,
रक्षा मंत्रालय/Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन/Defence Research & Dev. Orgn.
अनुसंधान केन्द्र इमारत/RESEARCH CENTRE IMARAT
डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम प्रक्षेपास्त्र समष्टि
Dr. APJ Abdul Kalam Missile Complex,
प्रबंध सेवा निदेशालय/Dte. of Management Services
विज्ञानकांचा पी.ओ./Vignyanakancha P.O
हैदराबाद / HYDERABAD - 500 069

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि **आरसीआई की गृह पत्रिका 'इमारत'** का 17वां नियमित अंक प्रकाशित हो रहा है। यह अंक भी पिछले अंकों की तरह वैज्ञानिक जानकारियों, साहित्यिक प्रस्तुतियों और राजभाषा के क्षेत्र की नवीनतम प्रगतियों और विचारों का एक संकलन प्रस्तुत करता है।

'इमारत' पत्रिका हमेशा से ही हिंदी भाषा के माध्यम से हमारे क्षेत्र के पेशेवरों और पाठकों के बीच ज्ञान और विचारों के आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण मंच रही है। इस अंक में भी आपको उत्कृष्ट लेख, कहानियां और रोचक प्रस्तुतियां पढ़ने को मिलेंगी, जो निश्चित रूप से आपके ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होंगे।

मैं इस अवसर पर पत्रिका के अपने संपादक मंडल और उन सभी लेखकों और योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने इस अंक को सफल बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

आप सभी से अनुरोध है कि **'इमारत'** के इस नए अंक को पढ़ें और अपने विचारों से हमें अवगत कराएं। आपकी प्रतिक्रियाएं हमें भविष्य में पत्रिका को और बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होंगी।

शुभकामनाएँ!

पी. अनिल कुमार

(डॉ पी अनिल कुमार)

दिनांक : 12 मई, 2025

संपादक की कलम से

मेरे विचार में पत्रिकाएं चिंतन अभिरुपण के साथ-साथ संवाद का भी एक सशक्त माध्यम होती हैं जिसमें हम अपने कार्यालयों के कार्मिकों की तकनीकी प्रतिभा के साथ साहित्य की प्रछन्न अधिकारिता का भी संपादन करते हैं। जब हम अपनी पत्रिकाओं को पत्राचार के माध्यम से अन्य कार्यालयों मे प्रेषित करते हैं तो वो केवल साधारण पुस्तक सी प्रतीत होती है जबकि वास्तव में यह हमारे कार्यालयों की कार्य पद्धति, भाषा प्रेम एवं चित्रदीर्घा के माध्यम से कार्यालय के जीवंत स्वरुप का परिलक्षण करती है।

हमारी पत्रिकाएं हमारे संवैधानिक कर्तव्यों के पालन में सहायक ही सिद्ध हुई हैं क्योंकि हिंदी को जनसामान्य की भाषा के रुप में स्थापित करना हमारा संवैधानिक लक्ष्य है और उस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु राजभाषा प्रभाग द्वारा वर्षभर विभिन्न कार्यक्रमों जैसे हिंदी की एकदिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, हिंदी दिवस एवं विश्व हिंदी दिवस तथा क्लस्टर स्तर की संगोष्ठियों के माध्यम से कार्मिकों को कार्यालयी स्तर पर हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया जाता है। मेरा यह मानना है कि किसी भी कार्यालय में हिंदी के प्रयोग और हिंदीमय वातावरण निर्मित करने में गृह-पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्रिका के इस अंक में भी हमारे वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों ने अत्यंत ही सहज एवं प्रभावी हिंदी में अपनी रचनाओं के माध्यम से योगदान दिया है।

हमारी प्रयोगशाला आरसीआई ने वांतरिक्ष एवं अन्य सामरिक क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी के विकास एवं अनुसंधान में विश्वस्तर पर ख्याति प्राप्त की है। आरसीआई को कंट्रोल इंजीनियरिंग, इनर्शियल नेविगेशन, इमेजिंग इन्फ्रारेड सीकर, आरएफ सीकर, ऑनबोर्ड कंप्यूटर एवं मिशन सॉफ्टवेयर में अनुसंधान एवं विकास के कार्य करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। आरसीआई, राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में सदैव उन्नत प्रदर्शन हेतु प्रयासरत रहा है।

इसी क्रम में अभी कुछ माह पूर्व हमारी प्रयोगशाला में द्वितीय अखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलन उन्मेष-2025 का सफल एवं चिरस्मृत आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भारत के विभिन्न वैज्ञानिक संस्थाओं, संस्थानों एवं संगठनों जैसे आईआईटी, आईआईआईटी, एनआईटी, इसरो एवं विविध विश्वविद्यालयों आदि जैसे शैक्षणिक संस्थानों से कुल 175 शोध पत्र प्राप्त हुए। इससे यह ज्ञात होता है कि हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में निरंतर वृद्धि हो रही है।

हिंदी गृह–पत्रिका इमारत के नियमित सत्रहवें अंक को आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। आशा करता हूं कि यह अंक आपको पसंद आयेगा साथ ही यह अनुरोध भी करना चाहूँगा कि आप अपनी प्रतिपुष्टि के माध्यम से अपने बहुमूल्य विचारों एवं सुझावों से हमें अवगत कराएं ताकि हम अपने आगामी अंको को और अधिक रुचिकर एवं उत्कृष्ट बना सकें।

काज़िम अहमद
सहायक निदेशक (रा.भा.), संपादक

अनुक्रमणिका

1 रामेश्वरम से राष्ट्रपति तक
- डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

2 वीर सपूतों की कुर्बानी

5 भाषा की अपरिहार्यता

6 कृषक हीनता

7 गणपति वंदन

8 आजादी गाथा

9 वे एक समंदर

15 छोड़ दिए तुमने जो पन्ने |
हिंदी की ताजपोशी

16 चाहतें

18 हँसगुल्ले

19 अनमोल वचन

27 ये कविता तो नहीं है | माँ

28 देश को अपने बचाना है
किसी भी सूरत

29 मिसाइल रक्षा प्रणाली

32 पिता

36 म्यांमार का भूकंप:
एक भयानक त्रासदी

38 घर बाहर जूझती महिलाएं

39 वर्ष के दौरान आरसीआई
में सेवानिवृति

40 आज मैं खुश हूँ

41 मेरा ख्याल

42 जिम्मेदार नागरिक

44 ख्वाब |
शोर में संसार है

45 चरित्रम निर्माणम वर्तमानम

48 आरसीआई की राजभाषा
गतिविधियाँ (वर्ष 2024-25)

49 राजभाषा पक्ष 2024
प्रतियोगिताओं के परिणाम

59 प्रोत्साहन राशि का का वितरण

60 पारंगत पाठ्यक्रम के परिणाम
(जुलाई–नवंबर 2024)

62 मौसम की तरह बदलना नहीं आता

63 आपदा प्रबंधन

65 मां का पल्लू

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

रामेश्वरम से राष्ट्रपति तक

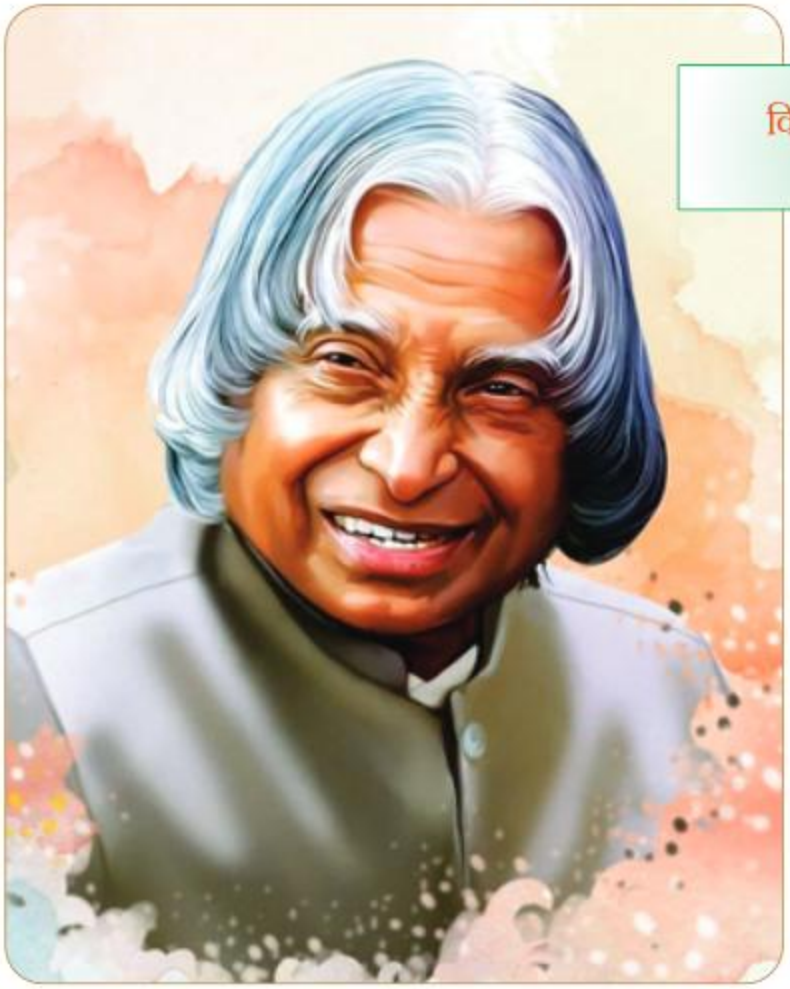

विमल कुमार जैन
वै-एफ

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, जिन्हें 'भारत के मिसाइल मैन' के रूप में जाना जाता है। वह भारतीय समाज में एक प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित हैं। उनका जीवन संघर्ष, समर्पण और सेवा का प्रतीक है। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में योगदान के अलावा, भारत के राष्ट्रपति के रूप में भी अपने कार्यकाल में देश की सेवा की। ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ था। वे एक साधारण मछुआरे परिवार में जन्मे थे। अपने गरीब परिवार के बावजूद, अब्दुल कलाम के माता-पिता ने उन्हें शिक्षा के महत्व को समझाया और जीवन में कुछ बड़ा करने के लिए प्रेरित किया। अब्दुल कलाम का विज्ञान के प्रति विशेष रुझान था और उन्होंने अपने जीवन के शुरुआती दिनों से ही कड़ी मेहनत और इरादे से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाया। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा रामेश्वरम के स्थानीय स्कूल से प्राप्त की और फिर तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज से भौतिकी में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, कलाम ने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MIT) से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में अपनी शिक्षा पूरी की। उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) में अपना करियर शुरू किया। 1969 में वे ISRO से जुड़े और भारतीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (SLV) को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस मिशन में सफल होने के बाद, भारत ने अपने पहले उपग्रह रोहिणी को 1980 में कक्षा में स्थापित किया।1970 के दशक में, डॉ. कलाम रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) में स्थानांतरित हो गए, जहां उन्होंने भारत के मिसाइल कार्यक्रमों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 'अग्नि' और 'पृथ्वी' जैसी मिसाइलों का विकास किया, जो भारतीय रक्षा क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण साबित हुईं।1998 में पोखरण-II परमाणु परीक्षणों के दौरान, डॉ. कलाम ने भारतीय परमाणु कार्यक्रम को सशक्त किया और भारत को एक परमाणु शक्ति के रूप में स्थापित किया। डॉ. कलाम को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अलावा लेखन से भी गहरा लगाव था। उन्होंने अपनी जीवनी 'विंग्स ऑफ फायर' के माध्यम से अपने जीवन के संघर्षों, प्रेरणाओं और उपलब्धियों को साझा किया। यह पुस्तक लाखों युवा भारतीयों के लिए एक प्रेरणा बन गई।उनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं, **इग्नाइटेड माइंड्स, माई जर्नी**, आदि ।

2002 में, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में चुना गया। उनका चुनाव भारतीय जनता के लिए एक ऐतिहासिक घटना थी, क्योंकि वे एक वैज्ञानिक थे और न कि किसी राजनीतिक परिवार से थे। उनका सरल और विनम्र स्वभाव उन्हें जनता के बीच बेहद लोकप्रिय बना दिया।राष्ट्रपति पद पर रहते हुए, उन्होंने युवा पीढ़ी को विज्ञान, शिक्षा, और राष्ट्र निर्माण के महत्व को समझाने के लिए कई भाषण दिए। उन्होंने यह कहा कि भारत का भविष्य उसके युवा नागरिकों के हाथों में है। उनका 'इंडिया 2020' दृष्टिकोण आज भी भारत की प्रौद्योगिकी और विज्ञान के क्षेत्र में मार्गदर्शन करता है। राष्ट्रपति पद के कार्यकाल की समाप्ति के बाद, डॉ. कलाम ने युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में काम जारी रखा। उन्होंने विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में lectures दिए, जहां उन्होंने छात्रों से राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने के लिए कहा। 'राष्ट्र निर्माण में सबसे बड़ा योगदान शिक्षा का है' इस विश्वास को वे साझा करते थे।डॉ. कलाम का निधन 27 जुलाई 2015 को भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिलांग में एक व्याख्यान के दौरान हुआ। उनका निधन न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक अपूरणीय क्षति थी।डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जीवन एक आदर्श जीवन था। उन्होंने न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में योगदान दिया, बल्कि भारतीय युवाओं को अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया। उनके विचार और कार्य आज भी भारतीय समाज में एक मार्गदर्शक की तरह हैं। उनका विश्वास था कि शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी विकास के माध्यम से भारत दुनिया में अग्रणी बन सकता है।

वीर सपूतों की कुर्बानी

काज़िम अहमद
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आज़ादी के नायक थे वो
अमर रहेगी उनकी कहानी।
कौन भुला सकता है ऐसे
वीर सपूतों की कुर्बानी।

खून के बदले आज़ादी का
दिया बोस ने अद्भुत नारा।
आज़ादी के परवानों ने
आज़ाद कराया देश हमारा।

गाँधीजी के सत्य अहिंसा
सत्याग्रह ने राह दिखाई।
मौलाना आज़ाद ने भी
आज़ादी की शमा जलाई।

देश की खातिर प्राण त्यागने
तत्पर थे सारे सेनानी।
जान लुटा दी भगत सिंह ने
छोड़के अपनी भरी जवानी।

भीमराव और लोकमान्य का
देशप्रेम था बड़ा निराला।
खुद की किए बिना परवाह
लड़े लाजपत राय लाला।

कितनी लाशें बिछी राह में
आज़ादी का बसा जुनून।
चरणों में भारत माता के
बहाया सबने अपना खून।

विविध खेलकूद गतिविधियों की झलकियाँ

विविध खेलकूद गतिविधियों की झलकियाँ

भाषा की अपरिहार्यता

सूरज कुमार पांडेय
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भाषा ही एकमात्र वह साधन है जो अन्य पशुओं से मनुष्य को पृथक करती है और उसे मनुष्य बनाती है साहित्य, ज्ञान, विज्ञान, कला सभी क्षेत्रों में मनुष्य की समस्त उपलब्धियों का एकमात्र आधार भाषा ही है। यहां मुझे विख्यात दार्शनिक, व्याकरणविद् श्री भर्तृहरि के विचारों की चर्चा करना स्थिति अनुरुप लगता है जिसमें वे कहते हैं –

अर्थप्रवृत्तितत्वानां शब्दा एव निबंधनम्।

जिसका तात्पर्य यह है कि जो भी लौकिक व्यवहार संपन्न होता है वह भाषा के द्वारा संपन्न होता है। मनुष्य प्रेम भी करता है तो भाषा की ही सहायता से और झगड़ने के लिए भी भाषा की ही जरुरत पड़ती है। इस तरह भाषा मेल का भी कारण है और विरोध का भी। हमारे साहित्य, दर्शन, धर्म और कला में भारतीयता की भावना ओत-प्रोत रही है और इसी आधार पर देश के विभिन्न भागों में बसनेवाले एकता का अनुभव करते रहे हैं, किन्तु यह एकता विभिन्न भाषाओं में व्यक्त हुई है, उसकी अभिव्यक्ति के माध्यम अनेक रहे हैं। हिंदी बांग्ला, तमिल, तेलुगु, गुजराती, मराठी केवल विभिन्न वाणियां हैं परंतु उनके भीतर जो आत्मा है वह एक है, जिसमें समग्र भारत की ध्वनि सुनाई पड़ती है। तो इस भाषा भेद के रहते हुए भी राष्ट्रीय एकता रही है या इसको उलटकर यह भी कह सकते हैं कि राष्ट्रीय एकता अनेक भाषाओं के माध्यम से प्रकट हुई है। इससे स्पष्ट है कि संस्कृति और भाषा का अविनाभाव संबंध नही है।

एक राष्ट्र में अनेक भाषाएं हो सकती है, जैसे रुस, कनाडा, स्विट्जरलैंड, भारत आदि में है। रुस अनेक जनतंत्रों का संघ है और उन सभी जनतंत्रो की पृथक-पृथक भाषाएँ है, पर संपूर्ण सोवियत संघ की राष्ट्रभाषा रुसी है। भारत में संविधान द्वारा स्वीकृत भाषाओं की संख्या बाईस है। भाषा की भिन्नता अमेरिका के संयुक्त राज्य में भी है, किन्तु राजभाषा के रुप में स्वीकृत केवल अंग्रेजी ही है। इसके प्रतिकूल ऐसे भी उदाहरण विद्यमान हैं कि अनेक राष्ट्रों में भाषा एक ही है जैसे इग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड राष्ट्र की दृष्टि से अनेक हैं किन्तु भाषा अंग्रेजी ही है। इन उदाहरणों को देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि राष्ट्रीयता और भाषा की एकता अनिवार्य नहीं है। एक राष्ट्र में अनेक भाषाएं हो सकती हैं और अनेक राष्ट्रों में एक भाषा।

राष्ट्रीयता के विकास के साथ उसके अनेक प्रतीक भी विकसित हुए हैं। इनमें झण्डा और राष्ट्रगान तो है ही, इन दोनो से अधिक नहीं तो इनके समकक्ष ही राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रुप में राष्ट्रभाषा भी है। राष्ट्रभाषा की आवश्यकता राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से भी है। अपने को एक ही राष्ट्र का निवासी मानने वाले दो व्यक्ति किसी विदेशी भाषा में बातें करें यह हास्यास्पद विसंगति है। यह इस बात का द्योतक भी है कि उस देश में कोई समुन्नत भाषा नहीं है। जिसकी अपनी भाषा है वह दूसरे की भाषा क्यों उधार ले? इससे राष्ट्रीय सम्मान में बट्टा लगता है, विदेशों में जाने पर कभी-कभी इस बात का बड़ा कड़वा अनुभव होता है कि अपने को भारतीय कहने वाले दो व्यक्ति अपने देश की भाषा में बात न करके विदेशी भाषा को विद्वता का आधार मानते हैं। भावनात्मक एकता की चर्चा आजकल बार-बार सुनाई देने लगी है उसका सबसे सबल साधन भाषा की एकता ही है। परंतु भावनात्मक एकता तभी संभव है जब पूरे राष्ट्र में भावों या विचारों के आदान-प्रदान में कोई कठिनाई न हो, अर्थात आदान-प्रदान का माध्यम कोई एक हो। विदेशी भाषा देशी भाव को यथावत् अभिव्यक्त कर सके यह बिल्कुल असंभव है। यदि ऐसा संभव होता तो अपनी भाषा की आवश्यकता ही क्या थी? इसलिए भावात्मक एकता का नारा तब तक नारा ही बना रहेगा जब तक भाषा की एकता नहीं हो पाती। लोग स्विट्जरलैंड का नाम लेकर भाषा की विविधता का समर्थन करना चाहते हैं, किन्तु भारत स्विट्जरलैंड नहीं है। भारत की तुलना करनी ही है तो रुस से करनी चाहिए जहाँ भाषा की अनेकता भारत जैसी ही है फिर भी राष्ट्रीय पैमाने पर जो कार्य होते हैं वे केवल एक भाषा (रुसी) में। आंचलिक भाषाएं तत् संबंधी स्थानों के लिए पर्याप्त हैं किन्तु उनसे पूरे संघ का योगक्षेमम् नहीं चलता। वही स्थिति भारत की भी है। इसीलिए वही ढाँचा यहाँ भी अपनाना होगा। तात्पर्य यह कि राष्ट्रीय एकता के प्रतीक, राष्ट्रीय सम्मान, भावात्मक एकीकरण और आर्थिक लाभ की दृष्टि से संपूर्ण राष्ट्र के लिए एक भाषा की आवश्यकता अपरिहार्य है।

कृषक हीनता

भुवनेश्वर प्रसाद
तकनीशियन-सी

धरती रोये, अंबर रोये
रोये नदियाँ और पहाड़
कृषक हीनता देखके रोये
ये सारा संसार

कृषक की ये जीवन शैली
बन गयी जैसे विष की थैली
रात-रात भर भूखा सोवे
किस्मत को वो अपनी रोवे

चाम-चाम हड्डी में चिपका
ऐसी दशा की जिम्मा किसका
कौन इसे आके समझाये
किससे ये हमदर्दी पाये

ये समाज जीता है इन पर
दोष लगावे हम किस-किस पर
सबने इसको खूब है चूसा
आनाज सभी का खुद पाये भूसा

इनसे बने सेठ धनी
इन्हीं से गढ़ी इनकी कहानी
फिर भी कोई न देखे इनको
इस जग अपना कहें किसको

धरती पुत्रों की आहन लीजे
इन्हें प्रेम से मेहनताना दीजे
इनकी मेहनतवश देश है चलता
इनके द्वारा पेट है भरता

सबने माना सबने पूजा
कृषक बिना जग में दूजा
कौन मिटाये इनकी हस्ती
जनक कहें इन्हें पूरी बस्ती

अपने जनक की शान बढ़ाओ
इनके हित उच्च स्थान बनाओ
त्रिवेदी के ये शिरोताज हैं
देश की अपने रखे लाज हैं।

गणपति वंदन

संजय कुमार गुप्ता
संयुक्त निदेशक (प्रशासन)

भक्तों के प्रिय हे महागणपति.....
चरणों में तेरे शीश नवाऊँ
हे महागणपति, हे गौरीनंदन
दिल से करूँ तुम्हारा वंदन।

हे महागणपति, हे गौरीनंदन
दिल से करूँ तुम्हारा वंदन।

ज्ञान का सागर हो तुम
कुछ बूंदे हम पर भी बरसाओ
बुद्धि का दीपक हो तुम
तमस हृदय की मिटाओ

हे महागणपति, हे गौरीनंदन
दिल से करूँ तुम्हारा वंदन।

सिद्धि के दाता हो तुम
समता का अंजन दे दो
हृदय में प्रेम भर दो
और सारे द्वैत मिटा दो

हे महागणपति, हे गौरीनंदन
दिल से करूँ तुम्हारा वंदन।

ज्ञान से भटके ना हम
कृपा ऐसी बरसाओ
चरण तुम्हारे रहे हम
ऐसी ज्योत जलाओ

हे महागणपति, हे गौरीनंदन
दिल से करूँ तुम्हारा वंदन
भक्तों के प्रिय हे महागणपति।

आजादी गाथा

आनंद प्रकाश पांडेय
तकनीकी अधिकारी-ए

था 1914 का साल,
दुनिया में छिड़ी लड़ाई थी,
दुनिया पर छाया था ब्रिटेन,
पर जान गले को आयी थी।

भारत था पसरा छिन्न–भिन्न,
हर चार कदम पर राजे थे,
जो भरत मुनि का भारत था,
उसको टुकड़ों में बांटे थे।

जो कोंपल निकली थी स्वदेशी की,
उसकी भी जड़ काट दिया,
मार्ले–मिंटो ने भारत को,
हिंदू मुस्लिम में बांट दिया।

अब राहें सारी बंद हुई थी,
सबमति अंधियारी छायी थी,
इज्जत कर लो बाबू,
बलिदानों से आजादी आयी थी।

आशा की नयी किरण आयी,
गांधी भारत जब आये थे,
अंग्रेजों की थी एक शर्त,
जो बैठक में बतलाये थे।

हमको हिंदुस्तानी सेना दो,
आजादी हम दे देंगे,
जो विश्वयुद्ध को जीत लिया,
हम देर नहीं होने देंगे।

वो विश्वयुद्ध तो जीत गए,
पर शर्त कहां वो मान रहे,
जो गांधी के आलोचक थे,
उसको सार्जेन्ट पुकार रहे।

फिर मति चली बापू की,
आंधी असहयोग की आयी थी।
इज्जत कर लो बाबू,
बलिदानों से आजादी आयी थी।

फैली थी ऊर्जा नई सभी
भारतवासी के रग–रग में,
हर तरफ विरोध भी झेल रही,
अंग्रेजी सत्ता पग–पग में।

भी सत्य अहिंसा रथ सवार,
पर उसकी गति थी मंद पड़ी,
चौरी–चौरा की घटना से,
गांधी को पीड़ा हुई बड़ी।

जलियावाला की पीड़ा थी,
था खून युवा का उबल पड़ा,
थे जेल गए बापू तब,
सार घटना–क्रम था शून्य पड़ा।

बिस्मिल आजाद भगत अशफाक की,
अब असली पैदाइश थी,
इज्जत कर लो बाबू,
बलिदानों से आजादी आयी थी।

अब दाग पड़ा काकोरी का,
दामन अंग्रेजी सत्ता के,
थे सब अधिकारी डरे हुए,
यमराज कहां किसके सरपे।

जो बचा खुचा था उसमें भी,
अंग्रेजों ने घी डाल दिया,
करवाया लाठी चार्ज वहां,
लालाजी को था मार दिया।

फांसी बिस्मिल अशफाक भगत ने,
हंसके गले में डाला था,
मरने से पहले पंडित जी ने,
कई टुकड़ी को मारा था।

घुटनों पर आयी सत्ता,
स्वसंविधान की मांग अब आयी थी,
इज्जत कर लो बाबू,
बलिदानों से आजादी आयी थी।

नेहरू सुभाष और बाबा साहब,
सबका खून पसीना है,
बहुतों ने जान गंवाई,
बहुतों ने गुमनामी जिया है।

जाते–जाते अंग्रेजों ने,
असली भारत को मार दिया,
जो मिलके खून बहाये थे,
उनको टुकड़ो में बांट दिया।

फिर आया अपना संविधान,
अपना झंडा था लहराया,
हर घर खुशहाली आयी थी,
सबने आजादी था पाया।

थे तब घर–घर में दिये जले,
घर–घर में बटी मिठाई थी,
इज्जत कर लो बाबू,
बलिदानों से आजादी आयी थी।

वे एक समंदर

उत्पल कांत
वरिष्ठ तकनीकी सहायक–बी

वे एक समंदर खंगालने में लगे हुए हैं,
हमारी कमियां निकालने में लगे हुए हैं।
वो जिनकी अपनी इज्जत गई हुई हैं,
वो हमारी पगड़ी उछालने में लगे हुए हैं।

नहीं हम में कोई अनबन नहीं है,
बस इतना है कि अब वो मन नहीं है।
मैं अपने आपको सुलझा रहा हूँ,
तुम्हें लेकर कोई उलझन नहीं हैं।

आलम कुछ ऐसा है
कि कह नहीं सकते,
वो कहते हैं कि साथ
निभाएंगे जिंदगी भर,

लेकिन पहली मुलाकात हुआ कुछ ऐसा
कि कह नहीं सकते।

खराब वक्त में इज्जत
रखे संभाले हुए,
कभी न जेब सिक्के
रखे उछाले हुए,
डंसा गया हूँ मैं, लेकिन इलाज जानता हूँ
ये सांप है तो मेरी
आस्तीन के पाले हुए

सेंट्रल जोन फुटबॉल टूर्नामेंट की झलकियाँ

सेंट्रल जोन फुटबॉल टूर्नामेंट की झलकियाँ

सेंट्रल जोन फुटबॉल टूर्नामेंट की झलकियाँ

सेंट्रल जोन फुटबॉल टूर्नामेंट की झलकियाँ

सेंट्रल जोन फुटबॉल टूर्नामेंट की झलकियाँ

छोड़ दिए तुमने जो पन्ने

रजत
कोर्पोरेट

बड़ी मुरादों से भारत ने ऐसा बेटा पाया था,
आजादी का ख्वाब नजर जिसकी आँखों में आया था।

चौड़ी छाती आँख में शोले क्या बंदा परवाना था,
जिसकी मस्त अदा पर सारा देश हुआ दीवाना था।

क्या वजूद था उसका जिसने अपना सबकुछ छोड़ दिया,
घर से बाहर निकला तो हर हवा के रूख को मोड़ दिया।

जो वतन के खातिर रिश्तों की डोर तोड़ भी सकता है,
सरेआम दिल्ली में जाकर बम फोड़ भी सकता है।

जिसने माँ को लहू से सींचा गीत उसी के गाता हूँ,
छोड़ दिए तुमने जो पन्ने उनकी याद दिलाता हूँ।

हुआ हुक्म जो फांसी का तो भगत सिंह यूं मुस्काया,
बोला माँ अब तो गले लगा लो मुद्दतों में ये मौका आया।

तख्ते फांसी गूंच पर जब कदमों की आहट आती थी,
तो दीवारें भी झूम-झूम कर वंदे मातरम् गाती थी।

चूम के फांसी का फंदा फिर वंदे मातरम् बोला था,
कांप उठी थी वसुधरा अंग्रेजी शासन डोला था।

आखिर बोला वसीयत ए रखवाले मैं करता हूँ,
माँ की लाज बचा लेना अब तुम्हें हवाले करता हूँ।

आओ तुमको वंदे मातरम् की ताकत दिखलाता हूँ,
छोड़ दिए तुमने जो पन्ने उनकी याद दिलाता हूँ।

अफसाना ये दर्द शहीदों का मैं तुम्हें सुनाता हूँ,
छोड़ दिए तुमने जो पन्ने उनकी याद दिलाता हूँ।

हिंदी की ताजपोशी

संजय कुमार गुप्ता
संयुक्त निदेशक (प्रशासन)

भाषाएँ कितनी भी उम्मदराज हो जाए
पर होती वे कमसिन है।

मिल जाए धाराएँ कई भी
फिर भी दिखती जरीन है।

घेर ले अंधियारी काली स्याही सी
हुस्न फिर भी दिलकश हसीन है।

बात करें अब हिंदी की तो
वह तो बिल्कुल नवेली नाज़नीन है।

बढ़ी है वह कुछ समय के
खबरों की सुर्खियों की तरह

क्या आपको यह नहीं लगता कि
इसकी ताजपोशी बिल्कुल मुमकिन है।

चाहतें

श्रीमती रचना पोद्दार
डॉ विशाल कुमार
वैज्ञानिक-एफ की माताजी

लंच में कैंटीन में कॉफी पीने पहुँचे, कॉफी का आर्डर देकर विराट रूपा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोला-अच्छा रूपा अब तो हमलोगों का ये कॉलेज का आखिरी साल है फिर न जाने तुम कहाँ होगी और मैं कहाँ ? रूपा विराट के मुँह पर हाथ रखते हुए बोली ऐसा न कहो विराट : मैं तुमसे अलग तो हो जाऊँगी पर मैं, मैं न रहूँगी। ऐसी बातें रूपा के मुँह से सुनकर विराट का दिल एक बार जोर से धड़का मगर मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। विराट रूपा को मन ही मन चाहने लगा था। क्लास रूम में जाने के लिए घंटी बज गई। दोनों अपने-अपने क्लास रूम में चले गए। आज रूपा और विराट की मनोदशा एक जैसी ही थी। ये दिल्लगी भी बुरी चीज है। न चाहते हुए भी लोग अनायास एक दूसरे की ओर खिचे चले आते हैं। रूपा बोली ये सच ही तो है। पहले तो हम दो अजनबियों की तरह मिलते और न जाने क्यों हम दोनों एक-दूसरे के बारे में इतना सोचने लगते हैं जबकि हम जानते हैं कि हम दोनों की राहें अलग-अलग हैं। फिर इस दिल का क्या करें ?

विराट बोला रूपा कितना भी सोच लो कि हम दोनों सिर्फ एक सहपाठी हैं, परंतु दिल के किसी कोने में एक हूक सी उठती है और न चाहते हुए भी इस उम्र में लोग एक-दूसरे की ओर खिचे चले आते हैं। रूपा बोली ये दिल भी बुरी चीज है न विराट ? विराट एक ठंडी आह भरकर बोला, हाँ रूपा और दोनों कॉलेज कैम्पस में टहलते हुए काफी दूर निकल गए। कब शाम हो गई पता ही नहीं चला। जब गार्ड की सीटी की आवाज सुनाई दी तो दोनों घबराकर गेट से कॉलेज के बाहर आ गए। अजीब जिंदगी है ये भी दोस्ती ! जिनका कोई नाम नहीं होता। विराट अपने हॉस्टल के कमरे में छत को निहारते हुए बड़-बड़ा रहा था। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि रूपा की आँखें उसे निहार रही हैं।

विराट की तन्द्रा तब टूटी जब फोन की घंटी बज उठी। उठकर विराट फोन उठाया। फोन पर मम्मी कह रही थी कि विराट अब तो तुम्हारी परीक्षा खत्म हो गई अब तो घर आओगे ? हाँ मम्मी हाँ आउँगा। मम्मी बोली आज तुम्हारी आवाज को क्या हुआ। तुम खुश नहीं दिखाई दे रहे हो ? ऐसी कोई बात नहीं है मम्मी दोस्तों से बिछड़ने का दु:ख हो रहा है। अच्छा घर आओगे तो सारी उदासी दूर हो जाएगी। सारे रिश्ते-नाते तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। अच्छा ! मम्मी, पापा कैसे हैं ? वो ठीक हैं। अच्छा मम्मी मैं जल्दी ही घर आ जाऊँगा, फोन रखता हूँ। प्रणाम मम्मी, खुश रहो। मम्मी विराट के आने की खुश खबरी पापा को देने के लिए दूसरे कमरे में चली गईं।

दूसरे दिन विराट और रूपा कॉलेज आए तो दोनों काफी खामोश थे। प्रश्न तो दोनों के मन में ढ़ेरों थे। मगर दोनों के होंठ मानो सिल दिए गए हों। दोनों बिना बात किए ही अपने-अपने क्लास रूप में चले गए। क्लास खत्म होते ही क्लास रूम से बाहर आते ही दोनों एक-दूसरे से टकरा गए। विराट रूपा को संभालते हुए बोला रूपा जरा संभल के चलो, हाँ रूपा बोली। विराट बोला रूपा आज तुम काफी गुमशुम हो क्या बात है ? कुछ बोलती क्यों नहीं ? पहले तो तुम बुलबुल की तरह चहकती थी। रूपा बोली विराट परसों हम-दोनों अपने-अपने घर चले जाएंगे न ? हाँ रूपा। रूपा बोली क्या हम फिर कभी नहीं मिलेंगे ? विराट आहें भर बोला क्या पता ? जानती हो रूपा मिलन का दूसरा नाम ही जुदाई है।

इस बात पर रूपा विराट की बाहों में सिमट गई और बोली क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हमलोग शादी कर लें। विराट रूपा को अपने से अलग करते हुए बोला नहीं-नहीं रूपा यह बात अपने मन में कभी नहीं लाना, क्योंकि यह नहीं हो सकता। क्यूँ विराट ऐसा क्यूँ नहीं हो

सकता ? विराट बोला बच्ची मत बनो शादी-ब्याह कोई गुड्डे-गुड़ियों का खेल नहीं है। मैं अभी अपने पैरों पर खड़ा नहीं हूँ। कब नौकरी लगेगी क्या पता ? मगर मैं इतना जानता हूँ कि हमदोनों का प्यार निश्छल है। हम दोनों दोस्त हैं और ताउम्र दोस्त ही रहेंगे।

एक ठंढी आह भर कर बोली रूपा हूँ। विराट बोला मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिए कि वह अपने जीवन में कितना खुश है बल्कि यह सोचना चाहिए कि उस मनुष्य की वजह से कितने लोग खुश हैं। विराट तुम्हारी यही बातें तुम्हें मेरी नजरों में महान बना देती हैं। नहीं रूपा मैं महान कैसे हुआ ? मैं तुम्हें खुश नहीं रख सका इसका मलाल ताउम्र खलता रहेगा। मैं भी तो तुमसे अलग होकर तुम्हारी यादों से कभी बाहर नहीं निकल पाऊँगा।

विराट ये सही है कि हम दोनों अलग-अलग गृहस्थी बसा तो लेंगे अपने-अपने माँ-बाप के खुशी के लिए।

हाँ रूपा तुमने तो मेरे मन की बात कह डाली मगर हम कर भी क्या सकते हैं ? अच्छा रूपा चलो अपने-अपने हॉस्टल में सामान भी बांधना है। चौंकते हुए रूपा बोली विराट क्या हमलोग कभी नहीं मिल पाएँगे ? विराट बोला क्या पता! दोनों बातों में इतने मशगूल थे कि बिछड़ते वक्त दोनों एक-दूसरे के घर का पता भी नहीं ले पाए। रूपा अरूणाचल प्रदेश की रहने वाली थी और विराट सिक्किम का रहने वाला था।

दिल्ली से जाने के बाद दोनों का सिम चेंज हो जाएगा फिर दोनों चाहकर भी एक-दूसरे से न मिल सकेंगे और न ही बात कर सकेंगे। ट्रेन में विराट यही सोच रहा था और बार-बार करवट बदल रहा था वह सोने का प्रयास करने लगा ट्रेन में और उसके मुँह से अनायास ही निकल पड़ा ओफ! यह दिल्लगी भी बहुत बुरी चीज है।

लड़कियाँ ब्याही जाती हैं सरकारी मुलाजिमों से
बस ब्याही नहीं जाती तो सिर्फ अपने प्रेमियों से!

हँसगुल्ले

डॉ विशाल कुमार
वैज्ञानिक-एफ

- हसबैंड एक बैंड होता है जो बेलन से बजता है।
- संता – समुद्र में दही मिला रहा था

  बंता – यह क्या कर रहे हो ?

  संता–लस्सी बना रहा हूँ।

  बंता– बस तेरी इन्हीं हरकतों से लोग हमपर हँसते हैं। अब इतनी लस्सी क्या तेरा बाप पियेगा ?
- पति– पत्नी का अंतिम संस्कार करके लौट रहा था कि अचानक बिजली कड़कने लगी और ओले पड़ने लगे।

  पति बोला लगता है ऊपर पहुँच गई है।
- सिनेमाघर में एक युवती ने मैनेजर की कनपटी पर पिस्तौल रखकर कहा। मेरा पति दूसरी औरत के साथ फिल्म देख रहा है। उन दोनों को जल्दी से बाहर निकालो वरना मैं तुम्हें गोली मार दूँगी। मैनेजर ने अनाउंस करवाया–जो भी शादी–शुदा व्यक्ति पराई स्त्री के साथ पिक्चर देख रहे हैं जल्दी से बाहर आ जाएँ। अनाउंसमेंट के साथ दो मिनट में सारा थिएटर खाली हो गया।
- शिक्षक – पप्पू बताओ चुम्बकीय शक्ति का उदाहरण

  पप्पू – जब कोई लड़की स्कूटी पर सवार होकर बाईक सवार लड़के के बगल से गुजरती है तो इस लड़के के बाईक की गति स्वतः ही बढ़ जाती है। इसे ही चुम्बकीय शक्ति प्रवाह कहते हैं।

अनमोल वचन

सच्चे मित्रों के चुनाव के पश्चात सर्वप्रथम एवं प्रधान आवश्यकता है – उत्कृष्ट पुस्तकों का चुनाव।

– कोल्टन

संत दूसरों को दुख से बचाने के लिए कष्ट सहते हैं, दुष्ट लोग दूसरों को दुख में डालने के लिए।

– वाल्मीकि

असंतुष्ट व्यक्ति के लिए सभी कर्तव्य नीरस होते हैं, अतएव उसका जीवन असफल होना स्वाभाविक है।

– विवेकानंद

ईमानदार आदमी का सोचना लगभग सदैव न्यायपूर्ण होता है।

– रूसो

भूल जाना भी स्वतंत्रता का एक रूप है।

– खलील जिब्रान

यदि तुम्हें अपने में ही शांति नहीं मिलती तो बाहर उसकी तलाश व्यर्थ है।

– रोशे

अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाइए और इसके बाद, ईश्वर के दिए पूरे शारीरिक और मानसिक बल को उसमें लगाकर जुट जाइए।

– कार्लाइल

विषम दशा में पड़कर मूर्ख व्यक्ति भाग्य को दोष देने लगता है, लेकिन अपने कर्म-दोष को नहीं जानता।

– विष्णु शर्मा

सर्वोत्तम मनुष्य वह है जिसे सर्वोत्तम संतोष हो।

– स्पेंसर

किसी के प्रति मन में क्रोध रखने की अपेक्षा उसे तत्काल प्रकट कर देना अधिक अच्छा है, जैसे पल में जल जाना देर तक सुलगने से अच्छा है।

– वेदव्यास

संकलनकर्ता: काज़िम अहमद
सहायक निदेशक (राजभाषा)

उन्मेष – 2025 की झलकियाँ

उन्मेष – 2025 की झलकियाँ

उन्मेष – 2025 की झलकियाँ

उन्मेष – 2025 की झलकियाँ

उन्मेष – 2025 की झलकियाँ

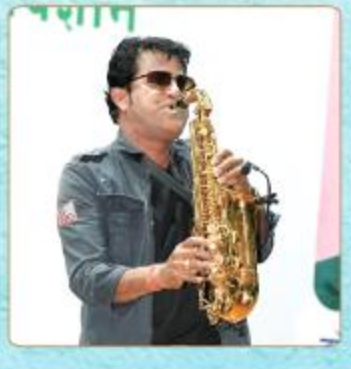

उन्मेष – 2025 की झलकियाँ

उन्मेष – 2025 की झलकियाँ

सतर्कता जागरुकता सप्ताह

ये कविता तो नहीं है

शलभ मेहता
वैज्ञानिक-एफ

रोना पुराना प्यार, ये कविता तो नहीं है।
हर दर्द का प्रचार, ये कविता तो नहीं है।

नेताओं की सी बातें, जैसे गधे की लातें,
नारे, गरज, ललकार, ये कविता तो नहीं है।

जो ताड़ करके तिल का, घंटों हो बांचते तुम,
शब्दों का है अम्बार, ये कविता तो नहीं है।

ना रस है, ना ही भाव, ना छंद मात्रा,
ना लय, ना अलंकार, ये कविता तो नहीं है।

खबरों को पिरोकर जो, जपते हो मंच से,
बासी हुआ अखबार, ये कविता तो नहीं है।

कुछ इसका ले लिया, तो कुछ उसका उठा लिया,
चोरी है या उधार, ये कविता तो नहीं है।

खुद को हैं माने गालिब, सबको सिखा रहे हैं,
बस भी करो सरकार, ये कविता तो नहीं है।

माँ

राहुल कुमार
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी

सब कुछ सहती है, फिर भी चुप रहती है
अपना निवाला देकर, तेरा पेट वो भरती है
माँ ऐसी ही होती है
हाँ सच में माँ ऐसी ही होती है।

सारे दुःख झेलकर, खुश तुझे वो रखती है
अपना मारकर मन, तेरी जेबें भरती है
माँ ऐसी ही होती है।

नौ माह भीतर रख कर, तेरी लातें सहती है
फिर भी सारे काज करके, कितना दर्द सह लेती है
माँ ऐसी ही होती है।

तेरी खुशियों के खातिर, दुनिया से लड़ पड़ती है
पर तेरी सलामती की, दुआ रोज वो करती है
माँ ऐसी ही होती है
हाँ सच में माँ ऐसी ही होती है।

देश को अपने बचाना है किसी भी सूरत

टी गोविंद सिंह
प्रशासनिक अधिकारी

देश को अपने बचाना है किसी भी सूरत
आग नफ़रत की बुझाना है किसी भी सूरत
अमन के फूल खिलाना है किसी भी सूरत
देश को स्वर्ग बनाना है किसी भी सूरत
सबका मजहब यही कहता है मोहब्बत से रहो
दिल से अब दिल को मिलाना है किसी भी सूरत
जुर्म छुप सकता नहीं उजले लिबासों में कभी
दंड दोषी को तो पाना है किसी भी सूरत
शब्द आतंक का मिट जाए मेरे भारत से
अमन का दीप जलाना है किसी भी सूरत
एक नासूर है ये फ़िरका परस्ती 'अक्षय'
इसको जहनों से मिटाना है किसी भी सूरत

मिसाइल रक्षा प्रणाली

कुंदन कुमार झा
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के नेतृत्व में भारत के मिसाइल कार्यक्रम, मिसाइल तकनीक में आत्मनिर्भरता हासिल करने पर केंद्रित हैं। प्रमुख पहलों में अग्नि, पृथ्वी और ब्रह्मोस जैसी बैलिस्टिक, क्रूज और एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल प्रणालियाँ शामिल हैं। ये कार्यक्रम भारत की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाते हैं, प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत करते हैं और अंतरिक्ष अन्वेषण एवं वैज्ञानिक प्रगति को बढ़ावा देते हैं।

भारत के मिसाइल कार्यक्रमों के बारे में

- **भारत के मिसाइल कार्यक्रम** अपनी शुरुआत से ही रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य के साथ महत्वपूर्ण रूप से विकसित हुए हैं। मुख्य रूप से रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) द्वारा विकसित, ये कार्यक्रम बैलिस्टिक, क्रूज़ और एंटी-बैलिस्टिक मिसाइलों सहित कई प्रकार की मिसाइल प्रणालियों को कवर करते हैं।
- **1980** के दशक में शुरू किए गए भारत के एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (आईजीएमडीपी) ने पृथ्वी (सतह से सतह पर मार करने वाली) और अग्नि (परमाणु-सक्षम बैलिस्टिक मिसाइल) जैसी प्रतिष्ठित मिसाइलों के साथ इसकी नींव रखी।
- इसके बाद हुई प्रगति के फलस्वरूप अत्यधिक परिष्कृत प्रणालियां विकसित हुईं, जैसे ब्रह्मोस, जो रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है, तथा शौर्य हाइपरसोनिक मिसाइल।
- इस कार्यक्रम की सफलता भारत की रणनीतिक क्षमताओं को बढ़ाती है तथा इसे क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा गतिशीलता में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में स्थापित करती है।
- यह रक्षा क्षेत्र में तकनीकी नवाचार के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

भारत के मिसाइल कार्यक्रमों की विशेषताएँ

डीआरडीओ के नेतृत्व में भारत के मिसाइल कार्यक्रम राष्ट्रीय सुरक्षा और तकनीकी आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **मिसाइलों की विविध रेंज:** सामरिक लचीलेपन के लिए इसमें छोटी, मध्यम और लंबी दूरी की मिसाइलें शामिल हैं। उदाहरण के लिए, अग्नि श्रृंखला में 700 किलोमीटर से लेकर 5,000 किलोमीटर से अधिक दूरी तक की मिसाइलें शामिल हैं।
- **मिसाइलों के प्रकार:**
  - **बैलिस्टिक मिसाइलें:** सतह से सतह पर मार करने वाली अग्नि और पृथ्वी श्रृंखला।
  - **क्रूज मिसाइलें:** ब्रह्मोस और निर्भय, उच्च गति, कम ऊंचाई पर नौवहन के लिए, जिससे सटीक हमले संभव होंगे।
  - **एंटी बैलिस्टिक मिसाइल (एबीएम):** उन्नत वायु रक्षा (एएडी) और पृथ्वी वायु रक्षा (पीएडी) प्रणालियां आने वाले खतरों के खिलाफ एक स्तरित रक्षा प्रदान करती हैं।
- **स्वदेशी विकास:** मुख्य रूप से डीआरडीओ, भारतीय उद्योगों और इसरो द्वारा निर्मित, न्यूनतम विदेशी सहायता के साथ, तकनीकी आत्मनिर्भरता और घरेलू विशेषज्ञता पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **परमाणु क्षमता:** अग्नि और पृथ्वी जैसी कई मिसाइलें परमाणु पेलोड ले जाने में सक्षम हैं, जिससे सामरिक प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है।
- **लचीले प्रक्षेपण प्लेटफार्म:** भूमि, वायु, समुद्र और पनडुब्बियों सहित विभिन्न प्लेटफार्मों से प्रक्षेपण के लिए डिज़ाइन किया गया, जो सामरिक बहुमुखी प्रतिभा प्रदान करता है।

- **गुप्तचरता एवं सटीकता:** उन्नत मार्गदर्शन एवं प्रणोदन प्रौद्योगिकियों का उपयोग सटीक लक्ष्य निर्धारण को संभव बनाता है तथा रडार प्रणालियों द्वारा पता लगाने को न्यूनतम करता है।
- **भावी कार्यक्रम:** इसमें हाइपरसोनिक मिसाइलें और उन्नत अंतरिक्ष रक्षा प्रणालियां जैसी पहल शामिल हैं, जिनका उद्देश्य वैश्विक रक्षा प्रगति के साथ तालमेल बनाए रखना है।
- **भारत का मिसाइल कार्यक्रम** राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा, रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने तथा तकनीकी स्वतंत्रता प्राप्त करने की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

भारत के मिसाइल कार्यक्रमों का महत्व

भारत के मिसाइल कार्यक्रम महत्वपूर्ण सामरिक, तकनीकी और आर्थिक महत्व रखते हैं:

- **राष्ट्रीय सुरक्षा:** मिसाइल कार्यक्रम भारत को विश्वसनीय प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं, विशेष रूप से परमाणु-सशस्त्र पड़ोसियों वाले क्षेत्र में, जिससे राष्ट्रीय रक्षा और संप्रभुता में वृद्धि होती है।
- **तकनीकी उन्नति:** उन्नत मिसाइल प्रणालियों का विकास प्रणोदन, मार्गदर्शन और सामग्री जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देता है, तथा घरेलू तकनीकी विशेषज्ञता को बढ़ावा देता है।
- **आत्मनिर्भरता:** ये कार्यक्रम विदेशी रक्षा आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता को कम करते हैं, जो भारत के 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य के अनुरूप है।
- **क्षेत्रीय स्थिरता:** एक मजबूत मिसाइल क्षमता दक्षिण एशिया में संतुलन सुनिश्चित करती है, आक्रामकता को रोकती है तथा क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देती है।
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा:** स्वदेशी मिसाइल विकास में सफलता भारत को एक महत्वपूर्ण वैश्विक रक्षा और अंतरिक्ष खिलाड़ी के रूप में स्थापित करती है, जिससे इसकी रणनीतिक साझेदारी मजबूत होती है।
- **आर्थिक प्रभाव:** स्वदेशी विकास से रोजगार सृजन होता है, स्थानीय उद्योगों को समर्थन मिलता है, तथा अंतरिक्ष, दूरसंचार और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

भारत में मिसाइलों के प्रकार

भारत का मिसाइल शस्त्रागार विविध है और इसे विभिन्न सामरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। प्रमुख प्रकार इस प्रकार हैं:

- **बैलिस्टिक मिसाइलें:**
  - **अग्नि श्रृंखला:** छोटी दूरी से लेकर अंतरमहाद्वीपीय (700-5,000+ किमी) तक, मुख्य रूप से परमाणु-सक्षम।
  - **पृथ्वी श्रृंखला:** कम दूरी (150-350 किमी), सामरिक, सतह से सतह पर हमले के लिए उपयोग की जाती है।
  - **के सीरीज:** पनडुब्बी से प्रक्षेपित बैलिस्टिक मिसाइल (एसएलबीएम), द्वितीय-आक्रमण क्षमता को बढ़ाती है।
- **क्रूज मिसाइलें:**
  - **ब्रह्मोस:** सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल, भूमि, समुद्र और वायु प्लेटफार्मों के लिए बहुमुखी; गति और सटीकता के लिए जाना जाता है।
  - **निर्भय:** सबसोनिक, लम्बी दूरी (1,000 किमी), रडार से बचने के लिए भूभाग को छूने की क्षमता के साथ।
- **एंटी बैलिस्टिक मिसाइल (एबीएम):**
  - **पृथ्वी वायु रक्षा (पीएडी):** उच्च ऊंचाई वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया।
  - **उन्नत वायु रक्षा (एएडी):** निम्न-ऊंचाई पर अवरोधन के लिए, दो-स्तरीय रक्षा कवच का निर्माण।
- **सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें (एसएएम):**
  - **आकाश:** मध्यम दूरी (30 किमी तक), हवाई खतरों को लक्षित करने के लिए डिज़ाइन किया गया।
  - **बराक-8:** इजरायल के साथ संयुक्त रूप से विकसित; विमान और मिसाइलों सहित विभिन्न हवाई खतरों को रोकने में सक्षम।
- **टैंक रोधी निर्देशित मिसाइलें (एटीजीएम):**
  - **नाग:** बख्तरबंद लक्ष्यों को नष्ट करने के लिए डिज़ाइन किया गया, हेलीकॉप्टर-लॉन्च

(हेलिना) जैसे वेरिएंट के साथ।

- **एमपीएटीजीएम:** मानव-पोर्टेबल, कम दूरी की मिसाइल, जो पैदल सेना के उपयोग के लिए लचीलापन प्रदान करती है।

- **सामरिक मिसाइलें:**
- **शौर्य:** हाइपरसोनिक, परमाणु-सक्षम मिसाइल, जिसे उच्च गति, कम रडार सिग्नल के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **प्रहार:** युद्धक्षेत्र समर्थन के लिए त्वरित प्रतिक्रिया, कम दूरी की मिसाइल प्रणाली।

ये मिसाइलें भूमि, वायु, समुद्र और समुद्री क्षेत्र में भारत की सामरिक रक्षा को मजबूत बनाती हैं, तथा मजबूत, बहुस्तरीय निवारण और सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं।

आगे बढ़ने का रास्ता

भारत की मिसाइल क्षमताओं को और मजबूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं:

- **स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा दें:** प्रणोदन, मार्गदर्शन प्रणालियों और मिश्रित सामग्रियों में उन्नत अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देना तकनीकी प्रगति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। डीआरडीओ, शिक्षा जगत और निजी उद्योग के बीच साझेदारी का विस्तार नवाचार को गति दे सकता है।
- **हाइपरसोनिक प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित:** हाइपरसोनिक मिसाइल अनुसंधान में निवेश करने से भारत को अल्ट्रा-फास्ट, अत्यधिक गतिशील मिसाइलों का विकास करने में मदद मिलेगी, जिनका पता लगाना और अवरोधन करना चुनौतीपूर्ण होगा, जिससे भारत अत्याधुनिक आक्रामक क्षमताओं वाले कुछ देशों में शामिल हो जाएगा।
- **एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल (एबीएम) प्रणालियों को मज़बूत करना:** बहुस्तरीय एबीएम प्रणालियों का विस्तार और परिशोधन संभावित मिसाइल खतरों से रक्षा को मज़बूत करेगा। अधिक परिष्कृत ट्रैकिंग और इंटरसेप्ट तकनीकों का एकीकरण भारत के रक्षा कवच को मज़बूत करेगा।
- **पनडुब्बी से प्रक्षेपित करने की क्षमता को बढ़ावा:** अधिक उन्नत और लंबी दूरी की पनडुब्बी से प्रक्षेपित करने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों (एसएलबीएम) के विकास से द्वितीय-आक्रमण क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे प्रथम-आक्रमण की स्थिति में भी निवारण सुनिश्चित होगा।
- **एआई और साइबर सुरक्षा को एकीकृत करना:** मिसाइल मार्गदर्शन और ट्रैकिंग में वास्तविक समय पर निर्णय लेने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करना, तथा मिसाइल प्रणालियों को संभावित हैकिंग से बचाने के लिए साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना, परिचालन तत्परता और विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का विस्तार:** सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों के लिए इज़राइल और ब्रह्मोस के लिए रूस जैसी रणनीतिक साझेदारियों को अगली पीढ़ी की मिसाइल तकनीकों के सह-विकास के लिए और गहरा किया जाना चाहिए। उन्नत मिसाइल विशेषज्ञता वाले देशों के साथ सहयोग भारत के विकास पथ को गति दे सकता है।
- **परीक्षण और तैनाती अवसंरचना को मजबूत करना:** तीव्र विकास चक्र और परिचालन तत्परता के लिए परीक्षण सुविधाओं और त्वरित तैनाती अवसंरचना का विस्तार करना आवश्यक है।
- **अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप:** यह सुनिश्चित करना कि मिसाइल विकास वैश्विक अप्रसार मानदंडों के अनुरूप हो, तथा साथ ही भारत की रणनीतिक स्वायत्तता भी बनी रहे, इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थिति में सुधार होगा तथा संभावित प्रतिबंधों से बचा जा सकेगा।

ये प्रयास भारत की मिसाइल क्षमताओं को बढ़ाएंगे, दीर्घकालिक सुरक्षा, तकनीकी नेतृत्व और आत्मनिर्भर रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को समर्थन प्रदान करेंगे।

निष्कर्ष

भारत के मिसाइल कार्यक्रम उसकी रक्षा को मज़बूत करते हैं, रणनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित करते हैं और विश्वसनीय प्रतिरोध के माध्यम से शांति को बढ़ावा देते हैं। स्वदेशी मिसाइल तकनीक को उन्नत करके, भारत आत्मनिर्भरता प्राप्त करता है, क्षेत्रीय स्थिरता को मज़बूत करता है और वैश्विक स्तर पर अपनी स्थिति मज़बूत करता है। ये कार्यक्रम राष्ट्रीय हितों की रक्षा और रक्षा एवं संबंधित क्षेत्रों में तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण बने हुए हैं।

पिता

विशाल सुनील डंके
तकनीशियन-ए

माँ की तो बहुत तारीफ हुई
लेकिन बेचारे पिता ने क्या किया।

पिता कठिन परिस्थितियों में हमें बचाते हैं
लेकिन फिर भी माँ की मिठास हम गाते हैं।

खाना बनाने वाली माँ याद आती है
लेकिन क्या रोटी कमाने वाला पिता याद आता है।

बेटे को चाहिए होती है मोटर गाड़ी
लेकिन वो बाप ही है जो बिना साबुन की करता है दाढ़ी।

देवकी माता का प्रेम हमेशा अपने हृदय में रखो
लेकिन टोकरी में बच्चे को ले जाने वाला पिता
वासुदेव भी याद रखो।

बेटा करता है कॉलेज में लड़कियों के पीछे हनी-बनी
लेकिन फिर भी पिता देता है उसको पॉकेट मनी
लड़की को चाहिए ब्यूटी पार्लर और नई साड़ी
लेकिन बाप चलाता है वही टूटी पुरानी गाड़ी।

जब बच्चे बड़े बन जाते हैं तो अपनी ही दुनिया में खो जाते हैं
लेकिन क्या उनको माँ-बाप के परिश्रम याद आते हैं।

बेटी को रिस्ता ढूंढने के लिए दर-दर भटकता है
न कभी थकता है, न कभी रूकता है, वही पिता होता है।

अपने परिवार को बड़े-बड़े अस्पताल में दिखाता है
लेकिन खुद मेडिकल से ली हुई गोली खाके सो
जाता है, वही पिता होता है।

आखिर में मैं यह कहना चाहता हूँ कि
परिश्रम करता है वह आपके लिए
हमेशा सम्मान रखो अपने पिता के लिए।

कार्यशालाएँ

कार्यशालाएँ

कार्यशालाएँ

मुख्यालय स्तर पर राजभाषा निरीक्षण

म्यांमार का भूकंप: एक भयानक त्रासदी

राजीव रंजन
प्रशासनिक सहायक 'बी'

भूकंप के नाम से आप सभी परिचित होंगे। आए दिन कहीं न कहीं हम सुनते रहते हैं कि फलाने जगह पर फलाने रिक्टर स्केल का भूकंप आया है। भूकंप को जलजला, धरती का डोलना, अंग्रजी में अर्थक्वेक आदि नामों से जाना जाता है। अभी हाल ही में म्यांमार का उदाहरण सामने है जिसमे हजारों लोंगों की जान चली गई है। म्यांमार का भूकंप एक गंभीर मुद्दा है और इसने एक बार फिर से प्रकृति के खतरों के प्रति हमें आगाह करने के लिए मजबूर किया है।

म्यांमार को पहले बर्मा के नाम से जाना जाता था और यह 1937 तक ब्रिटिश भारत में आता था। 1937 में यह भारत से अलग हुआ। म्यांमार भूकंप के प्रति एक संवेदनशील देश है और यहाँ अनेकों बार कई शक्तिशाली भूकंप आए हैं जिनमें से कई 7.0 से अधिक तीव्रता वाले हैं। 28 मार्च 2025 को रिक्टर स्केल पर 7.7 तीव्रता वाला भूकंप आया जिसने देश को काफी क्षति पहुंचायी। मध्य म्यांमार के मांडले शहर में नुकसान व्यापक था। इस भूकंप का केंद्र मांडले से 17.02 किलोमीटर की दूरी पर था। मांडले एक बड़ी आबादी वाला म्यांमार का दूसरा बड़ा शहर है। यह इरावदी के किनारे स्थित है और ऐतिहासिक रूप से म्यांमार के राजाओं की राजधानी रहा है। इस भूकंप से म्यानमार ही नहीं बल्कि थाईलैंड, चीन, लाओस एवं बांग्लादेश भी प्रभावित हुए।

इस शक्तिशाली भूकंप नें शहरों, ऐतिहासिक स्थलों तथा बुनियादी ढाचे को गंभीर क्षति पहुंचायी। हजारों लोगों के बेघर होने से उन्हें तत्काल आश्रय, भोजन एवं दवाओं की जरूरत पड़ी। चूँकि म्यानमार अभी गृहयुद्ध से भी जूझ रहा है। अतः आपातकालीन सेवाओं को लोगों तक पहुंचाने में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। देश में संचार और आवाजाही पर सख्त नियंत्रण होने के कारण राहत और बचाव कार्य में बहुत कठिनाईयां महसूस हुईं।

म्यानमार में भूकंप के कारण:

पृथ्वी का स्थलमंडल कई बड़े टेक्टोनिक प्लेटों से बना है। जब दो टेक्टोनिक प्लेटें एक दूसरे से टकराती हैं, अलग होती हैं या एक-दूसरे के किनारे से खिसकती हैं तो बहुत अधिक तनाव उत्पन्न होता है। इससे भूकंपीय तरंगों के रूप में संग्रहित प्रत्यास्थ ऊर्जा निकलती है जिससे भूकंप की उत्पत्ति होती है। म्यांमार में 1500 किलोमीटर तकर फैला सागाइंग फॉल्ट पश्चिम में भारतीय प्लेट और पूर्व में यूरेशियन प्लेट के बीच टेक्टोनिक प्लेट सीमा को चिन्हित करता है। यह दुनिया के सबसे लंबे और सबसे सक्रिय स्ट्राइक स्लिप फॉल्ट में से एक है। यह भूकंप भारतीय एवं यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों की बीच 'स्ट्राइक स्लिप फॉल्टिंग' के कारण आया। स्ट्राइक स्लिप फॉल्टिंग में प्लेटों या चट्टानों की क्षैतिज गति शामिल होती है, जिसमें चट्टानें एक दूसरे के ऊपर से दायीं या बायीं ओर खिसकती हैं। म्यांमार चार टेक्टोनिक प्लेटों – यूरेशियन, इंडियन, सुंडा और बर्मा के अभिसरण पर एक भूंकपीय रूप से सक्रिय क्षेत्र में स्थित है और इन प्लेटों का लगातार खिसकना और टकराना इस क्षेत्र में भूकंपों का कारण है।

भारत द्वारा मानवीय सहायता:

भारत ने म्यांमार की मदद के लिए 'ऑपरेशन ब्रह्मा' चलाया और पहली राहत विमान से 15 टन की राहत सामग्री म्यांमार भेजी गई। साथ ही 80 लोगों की एनडीआरएफ की टीम भी रवाना हुई। समय-समय पर अन्य प्रकार की सहायता भी की जा रही है। भारत भूकंप से तबाह हुए इस देश को फिर से बनाने में बहुत

मदद कर रहा है।

भूकंप हर बार अपने साथ भयानक त्रासदी लाता है। जानमाल की भारी क्षति होती है। क्या इसे रोका जा सकता है। भूकंप एक प्राकृतिक आपदा है और इस पर मानव का कोई नियंत्रण नही है। लेकिन हां हम भूकंपरोधी उपायों का अनुसरण करके काफी हद तक नुकसान को कम कर सकते हैं। गगनचुंबी इमारतों के निर्माण में उच्च गुणवता तथा भूकंपरोधी मानकों का प्रयोग जानमाल के नुकसान को काफी कम कर सकते हैं। सड़कें अच्छी हों और काफी चौड़ी हों तो इससे भूकंप के समय एवं बाद में बाहर निकलर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचने में मदद मिलेगी। भूंकप के बाद के प्रभावों से निपटने के लिए त्वरित आपदा राहत टीम होनी चाहिए जो कि चिकित्सीय एवं अन्य प्रकार की मदद करने में निपुण हो। साथ ही विद्यालय स्तर से ही भूकंप से निपटने के लिए जरूरी प्रशिक्षण देना होगा ताकि आपदा के समय अव्यवस्था एवं अराजकता नही फैले। ऐसे उपकरणों का समुचित प्रयोग सुनिश्चित किया जाए जो समय रहते सूचना दे सकने में सक्षम हों। धरती के अंदर हो रही हलचलों की निगरानी होते रहना भी जरूरी है।

निष्कर्ष: म्यानमार में भूकंप एक गंभीर मसला है और 2025 का भूकंप देश में सबसे घातक भूकंपों में से एक था। भूकंप से म्यानमार और थाईलैंड में व्यापक क्षति हुई और जानमाल का नुकसान हुआ। म्यानमार में चल रहे गृहयुद्ध ने राहत प्रयासों को और कठिन बना दिया। जब भी भूकंप आता है तो इससे आम जनता को काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। जनजीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। जरूरी सामग्रियों की किल्लत होने लगती है। और अगर देश पहले से ही कई चुनौतियों का सामना कह रहा हो तो जरूरत की हर चीज को सही समय से पहुंचने में बहुत देर हो जाती है। खैर जहां तक संभव हो पाया है बहुत सारे देशों ने अपने अपने स्तर से म्यांमार को सहायता देने में कोई कसर नही छोड़ी। राहत और बचाव में विश्व ने महत्वपूर्ण सहायता की है। भारत भी पीछे नही रहा और म्यांमार के लोगों को एक बड़े भाई की तरह हर संभव मदद की और कर भी रहा है। हालांकि म्यांमार भूकंप की तबाही के बाद फिर से उठने की कोशिश कर रहा है फिर भी म्यानमार के लोगों को पूरी तरह से इससे उबरने में अभी लंबा वक्त लगेगा।

घर बाहर जूझती महिलाएं

मुनमुन चक्रवर्ती
भंडार सहायक-ए

ऑफिस से आकर मैं आराम करता हूँ
वो घर का काम करती है
घर देखकर मेरी थकावट बढ़ जाती है
और उसकी जैसे उतर जाती है
मैं बिस्तर पर सिमट जाता हूँ
वो घर के हर कोने में फैल जाती है
मुझे आँखों में थकान दिखती है
उसे घर के कोने में धूल और जाली दिखती है
इतनी हिम्मत पता नहीं उसमें कहा से आती है
मैं थककर चूर होता हूँ
वो पानी पिलाकर चाय बनाती है
गरमा गरम चाय का मैं एक एक घूंट आराम से पिता हूँ
ठंडी हो रही चाय जैसे उसका बेसब्री से इंतजार करती है
वो खाना तैयार करती है मैं दफ्तर में हुई बातों पर
बड़-बड़ाता हूँ
न वो परेशान दिखती है घर एवं दफ्तर में वो भी
काम करती है
उसे देखकर बच्चे मुस्कुराते हैं
उसके गले से चिपक जाते हैं
उसे मालूम है मेरे स्वाद की सब्जी कैसे बनती है
वो उतनी ही पतली रोटी बनाती है मुझे गरमा गरम
खिलाती है
और खुद ठडे आधे-पूरे भोजन में ही संतुष्टि पाती है
दफ्तर की बातों को वहीं छोड़ आती है
घर वो पत्नी और माँ बनकर आती है
मैं दफ्तर की बातों में उलझा रहता हूँ
दफ्तर राजनीति की खुन्नश बच्चों बीबी पर
निकालता हूँ
मिला क्या औरत को आजादी में पुरुषों से हुई
बराबरी में
घर में वहीं जिल्लत जारी है बाहर भी हो रही शिकार
बेचारी है।

वर्ष के दौरान आरसीआई में सेवानिवृति

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	बांधकवि साई वर प्रसाद	वैज्ञानिक 'जी'	30.04.2024
2.	पी श्रीनिवास रेड्डी	वैज्ञानिक 'जी'	31.05.2024
3.	श्रीनिवास राव जी	वैज्ञानिक 'जी'	31.05.2024
4.	नरसिम्हा राव टाटा	वैज्ञानिक 'जी'	31.05.2024
5.	सहदेव कपरपा	वैज्ञानिक 'जी'	30.06.2024
6.	विजयश्री एम	तकनीकी अधिकारी 'सी'	30.06.2024
7.	जय चन्द्र बाबू कुर्रा	वाहन चालक 'सी'	30.06.2024
8.	प्रकाश नायक जरुबुला	तकनीकी अधिकारी 'सी'	30.06.2024
9.	ए बी अनबेझिल	तकनीकी अधिकारी 'सी'	30.06.2024
10.	श्रीनिवास राव पी	तकनीकी अधिकारी 'सा'	30.06.2024
11.	नरसिंह राव संगपका	आशुलिपिक–।	31.07.2024
12.	एस वी नरसा राजू	तकनीकी अधिकारी 'सी'	31.07.2024
13.	रमेश बाबू उप्पला	वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक	31.07.2024
14.	सूर्यकांत सी	तकनीकी अधिकारी 'ए'	31.08.2024
15.	हरि बाबू मोडेम	फायर एनजी ड्राइवर डी	31.10.2024
16.	संगीता काली	प्रशासनिक अधिकारी	30.11.2024
17.	रामुलम्मा एल	मल्टी टास्किंग स्टाफ	31.12.2024
18.	डॉ. सुभाष कुमार शर्मा	वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'	31.12.2024
19.	पद्मजा सरन बी	तकनीकी अधिकारी 'सा'	28.02.2025
20.	जी विजय दुर्गा	वैज्ञानिक 'जी'	28.02.2025
21.	मोहम्मद अब्दुल करयूम	वाहन चालक 'सी'	05.03.2025
22.	डॉ. एमएसवाई शिव प्रसाद	वैज्ञानिक 'जी'	31.03.2025
23.	राजी रेड्डी सी	तकनीशियन 'सी'	31.03.2025
24.	भूषण राव एडुपुगंटी	वैज्ञानिक 'ई'	31.03.2025
25.	अम्मन्नी कड़ियाला	तकनीकी अधिकारी 'सी'	30.04.2025
26.	सरिता फुलममडिकर	तकनीकी अधिकारी 'सा'	30.04.2025
27.	सुब्रह्मण्यम वी वी	तकनीकी अधिकारी 'सा'	30.04.2025
28.	पोन्नम कृष्णैय्या	मल्टी टास्किंग स्टाफ	31.05.2025
29.	बी नागेश्वर राजू	वाहन चालक 'सी'	31.05.2025
30.	रमनेश्वर राव जे वी	तकनीशियन 'सी'	30.06.2025
31.	अंजनेयुलु एरुकाला	सहायक प्रभाग अग्निशमन अधिकारी	30.06.2025
32.	जी एस रत्न कुमारी	पीपीएस	20.06.2025
33.	पी बालासुंदरम	वैज्ञानिक 'जी'	30.06.2025
34.	देशराजू लीला शेषगिरि राव	वैज्ञानिक 'जी'	31.07.2025

आज मैं खुश हूँ

आज मैं खुश हूँ जैसे कोई पतंग
दिल में बसी है एक नई तरंग
हवाओं में कुछ खास है,
हर साँस में बसा मधुमास है।

सूरज की किरणों में गर्मी है,
मन की गहराई में नर्मी है।
आसमान में बादल मुस्काते है,
मेरे साथ सब गीत गाते है।

जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ
काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ।
आज पनीर नहीं, दाल में ही खुश हूँ।
आज गाड़ी नहीं, पैदल ही खुश हूँ।

जिसको देख नहीं सकता
उसकी आवाज से ही खुश हूँ।
जिसको पा नहीं सकता उसको
सोच कर ही खुश हूँ।

आज कोई बोझ नही है सिर पर
हर पल लग रहा जैसे नया सफर।
बीते कल की बातें भूल चुका हूँ,
आने वाले कल से भी अनजान हूँ।

अगर दिल को छुआ है मैंने, तो ही जवाब देना
वरना बिना जवाब के भी आज मैं खुश हूँ।

अभिषेक कुमार झा
तकनीकी अधिकारी-ए

मेरा ख्याल

गिरिश कुमार गोलु
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी

मेरे बाद तुझे बारिशों का मौसम कैसे भाता होगा
तेरे उन बालों को आखिर कौन सुखाता होगा

काली रातों में जब नींद नहीं आती होगी तुम्हें
अपनी बाहों में समेटे तुम्हें कौन सुलाता होगा

न जाने क्यूं हर वक्त मैं बस यही सोचता रहता हूँ
उसे शायरी तो नहीं आती फिर वो तुझे कैसे रिझाता होगा

वे बिंदी जो तुम्हारी पलकों के बीच लगी रहती है
उसे देख क्या वो भी मर जाता होगा

जरा भी जिद करते होंगे बच्चे तेरे राजा रानी की कहानी को
वो हमारी ही मोहब्बत को किरदार बदल-बदल कर सुनाता होगा

अब सीने पर सर रखकर सोने की आदत तो नहीं रही होगी
वो बादल बिछाता होगा गुलाबों से बिस्तर सजाता होगा

जब कभी किसी सिलसिले में दूर जाती होगी उससे
मोतियों की भाँति, क्या उसका दिल भी आँसुओं से भर जाता होगा

खैर, कब तक उसकी आस में नजरे आसमान पर टिकाए रहोगे 'गिरिश'
वो चाँद है उसका क्या वो किसी और छत पर उतर जाता होगा।

जिम्मेदार नागरिक

सचिन कुमार भारद्वाज
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

एक जिम्मेदार नागरिक बनना आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है। समाज और राष्ट्र की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि उसके नागरिक कितने जागरूक, कर्तव्यनिष्ठ और सक्रिय हैं। एक जिम्मेदार नागरिक न केवल अपने अधिकारों का उपयोग करता है, बल्कि अपने कर्तव्यों का भी पूरी ईमानदारी से पालन करता है।। एक जिम्मेदार नागरिक वह होता है जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो, समाज के नियमों का पालन करे, और अपने कार्यों से दूसरों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करे। आइए एक जिम्मेदार नागरिक बनने के विभिन्न पहलुओं, जैसे शिक्षा, सामाजिक जिम्मेदारी, पर्यावरण संरक्षण, कानून का पालन, और सामुदायिक सहभागिता पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

शिक्षा और जागरूकता

एक जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में पहला कदम शिक्षा और जागरूकता है। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और सही-गलत के बीच अंतर करने की क्षमता भी प्रदान करती है। एक शिक्षित नागरिक अपने अधिकारों और कर्तव्यों को बेहतर ढंग से समझता है और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में योगदान दे सकता है। इसके साथ ही, जागरूकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। हमें अपने आसपास के मुद्दों, जैसे गरीबी, भ्रष्टाचार, पर्यावरण और प्रदूषण, के प्रति संवेदनशील होना चाहिए ताकि हम इन समस्याओं के समाधान में भागीदार बन सकें।

कानून का पालन और नैतिकता

एक जिम्मेदार नागरिक के लिए कानून का पालन करना अनिवार्य है। देश के नियम और कानून समाज में व्यवस्था और शांति बनाए रखने के लिए बनाए गए हैं। चाहे वह यातायात नियमों का पालन हो या करों का समय पर भुगतान, ये छोटे-छोटे कदम एक नागरिक की जिम्मेदारी को दर्शाते हैं। इसके साथ ही, नैतिकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। कानून के दायरे में रहते हुए भी हमें अपने व्यवहार में ईमानदारी, सच्चाई, और दूसरों के प्रति सम्मान बनाए रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, रिश्वत न देना या न लेना और अपने कार्यक्षेत्र में पारदर्शिता बनाए रखना एक जिम्मेदार नागरिक की पहचान है।

सामाजिक जिम्मेदारी

सामाजिक जिम्मेदारी एक जिम्मेदार नागरिक का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। हमारा समाज विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, और परंपराओं का संगम है। एक जिम्मेदार नागरिक को सभी के प्रति समानता का भाव रखना चाहिए और भेदभाव से दूर रहना चाहिए।

इसके अलावा, जरूरतमंदों की मदद करना, जैसे गरीबों को दान देना, शिक्षा के प्रसार में योगदान देना, या सामाजिक कल्याण के लिए स्वयंसेवा करना, समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी को दर्शाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई व्यक्ति अपने आसपास किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई में मदद करता है, तो वह न केवल उस बच्चे का भविष्य संवारता है, बल्कि समाज को भी मजबूत बनाता है।

पर्यावरण संरक्षण

आज के समय में पर्यावरण संरक्षण एक जिम्मेदार नागरिक की सबसे बड़ी जिम्मेदारियों में से एक है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हमारे सामने बड़ी चुनौतियाँ हैं। एक जिम्मेदार नागरिक को इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और अपने स्तर पर छोटे-छोटे प्रयास करने चाहिए। जैसे कि, पानी और बिजली की बर्बादी रोकना, पेड़ लगाना, प्लास्टिक का उपयोग कम करना, और कचरे का पुनर्चक्रण करना। ये कदम न केवल पर्यावरण को स्वच्छ रखते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित करते हैं।

सामुदायिक सहभागिता और लोकतंत्र में भागीदारी

एक जिम्मेदार नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने समुदाय और देश के विकास में सक्रिय रूप से भाग ले। लोकतंत्र में मतदान करना एक नागरिक का सबसे बड़ा अधिकार और जिम्मेदारी है। अपने मत का प्रयोग करके हम सही नेतृत्व का चयन कर सकते हैं जो देश को प्रगति की ओर ले जाएं। इसके अलावा, सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेना, जैसे स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य शिविर, या सांस्कृतिक कार्यक्रम, समाज के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जब नागरिक सामूहिक रूप से कार्य करते हैं, तो समाज में सकारात्मक बदलाव की गति तेज हो जाती है।

व्यक्तिगत अनुशासन और स्वस्थ जीवनशैली

एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्तिगत अनुशासन भी आवश्यक है। समय का प्रबंधन, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना, और बुरी आदतों से दूर रहना न केवल हमारे जीवन को बेहतर बनाता है, बल्कि हमें दूसरों के लिए एक प्रेरणा भी बनाता है। एक स्वस्थ और अनुशासित नागरिक समाज के लिए अधिक उत्पादक होता है। उदाहरण के लिए, यदि हम नियमित व्यायाम करते हैं और स्वच्छता का ध्यान रखते हैं, तो हम बीमारियों से बचे रहते हैं और स्वास्थ्य सेवाओं पर अनावश्यक बोझ नहीं डालते।

जिम्मेदार नागरिक बनना एक सतत प्रक्रिया है जो आत्म-जागरूकता, समर्पण, और समाज के प्रति प्रेम से शुरू होती है। यह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि अपने परिवार, समाज, और राष्ट्र के लिए भी बेहतर जीवन की दिशा में एक कदम है। शिक्षा, कानून का पालन, सामाजिक जिम्मेदारी, पर्यावरण संरक्षण, और लोकतंत्र में भागीदारी जैसे पहलू मिलकर एक जिम्मेदार नागरिक की छवि बनाते हैं। यदि हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों को समझे और उनका पालन करे, तो हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं जो समृद्ध, शांतिपूर्ण, और न्यायपूर्ण हो। अंत में, यह हमारा कर्तव्य है कि हम न केवल अपने अधिकारों का उपयोग करें, बल्कि अपनी जिम्मेदारियों को भी पूरे मन से निभाएँ, तभी हम सच्चे अर्थों में एक जिम्मेदार नागरिक कहलाने के हकदार होंगे।

ख्वाब

अमित कुमार जायसवाल
भंडार सहायक-वी

ख्वाब जितने हसीन होते हैं
हकीकत उतनी ही बेरहम होती है।
जो हम सोचते हैं, वो हमेशा सच नहीं होता, और
जो सच होता है, वो हमें पसंद नहीं आता।
मगर जिंदगी की असली खूबसूरती
इसी में है कि हम हकीकत को अपनाएँ
और अपने ख्वाबों को सच करने की कोशिश करें।

शोर में संसार है

शोर में संसार है
हर तरफ चीत्कार है, सबमें एक नई धुन सवार है
शोर में संसार है।
नाद है प्रसन्नता का
गूंज है क्षोभ की
ध्वनि है योग की
कंपन है विक्षोभ का
हलचल की यह एक नई बयार है
शोर में संसार है।

संजीव कुमार
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-वी

हँसी के फव्वारे

मरीज – डॉक्टर साहब पर्चे में पहली दवा कौन सी है?

डॉक्टर – ये दवा नहीं है, मैं तो पेन चलाकर देख रहा था कि चल रहा है या नहीं।

डॉक्टर – चिंटू आपके एक्स-रे में आपकी हड्डी टूटी दिख रही है।

चिंटू – चलो भगवान का शुक्र है कि एक्स-रे में ही हड्डी टूटी है, अगर सच में टूट गई होती तो मेरा काफी खर्चा हो जाता।

गाँव से एक लड़का शहर पढ़ने आया।

एक लड़की ने पूछा – तुम्हारा निकनेम क्या है?

लड़का – है? वो क्या होता है?

लड़की – मतलब तुम्हें घर पर सब लोग किस नाम से बुलाते हैं?

लड़का – कामचोर

चरित्रम निर्माणम वर्तमानम

शैलेश कुमार
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी

केवल कल की खोज में घूम रहा संसार
गंभीर विषय है वर्तमान का इस पर करें विचार

विचलित मन है अति अभिलाषी
भ्रष्ट आचरण विकसित है
शिष्टाचार हो रहा शून्य
कैसे कह दूँ जन शिक्षित है
रिश्तों की गरिमा नष्ट हो
रही प्रेम बना व्यापार
जहां आदर सेवा भाव नहीं
वहां केवल है अंधकार
गंभीर विषय है वर्तमान का इस पर करें विचार

विश्वासपात्रता कपट ग्रसित
चरम पर है व्यभिचार
आलिंगन केवल भ्रम का है
है सत्य से कोसों दूर
तृष्णा खंड़ित भटक रही
हूँ कहने को मजबूर

मन खंड़ित तन सुख खोजे
ये कैसा है व्यवहार
गंभीर विषय है वर्तमान का इस पर करें विचार

नैतिकता आधार बने
तब हो चरित्र निर्माण
धर्म विषय कल्याण समर्पित
हो जन-गण-मन उद्धार
असत्य का हो जड़ उन्मूलन
मिटे ये भ्रष्टाचार
गंभीर विषय है वर्तमान का इस पर करें विचार

हिंदी दिवस समारोह

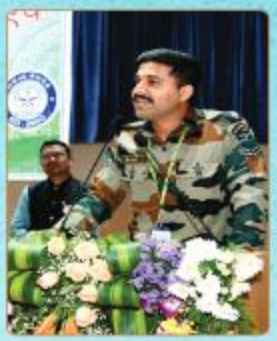

हिंदी दिवस समारोह

आरसीआई की राजभाषा गतिविधियाँ (वर्ष 2024-25)

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें: वर्ष में इस प्रयोगशाला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें निम्नलिखित विवरण के अनुसार आयोजित की गईं:

- 30 मई 2024
- 23 अगस्त 2024
- 19 नवंबर 2024
- 04 फरवरी 2025

हिंदी कार्यशालाएँ

वर्ष 2024–25 के दौरान आरसीआई में निम्नलिखित विषयों पर हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गईं:

• प्रथम कार्यशाला

आमंत्रित वक्ता : श्रीमती बेला, उपनिदेशक (हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद)
विषय : हिंदी में टिप्पण एवं मसौदा
दिनांक : 07 जून
सहभागियों की संख्या : 30

• दूसरी कार्यशाला

आमंत्रित वक्ता : श्री काज़िम अहमद, सहायक निदेशक (राजभाषा)
विषय : 'कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन'
दिनांक : 29 अगस्त 2024
सहभागियों की संख्या : 30

• तीसरी कार्यशाला

मुख्य वक्ता : डॉ साहिरा बानो बोरगल
विषय : 'हिंदी के साहित्यिक पक्ष की व्याख्या'
दिनांक : 19 नवंबर 2025
सहभागियों की संख्या : 30

• चौथी कार्यशाला

मुख्य वक्ता : डॉ राजनारायण अवस्थी, प्रबंधक(राजभाष) एवं श्री संजय कुमार गुप्ता
विषय : राजभाषा नीति एवं नियम तथा सीसीएस आचार नियम
दिनांक : 14 फरवरी 2025
सहभागियों की संख्या : 46

राजभाषा पक्ष 2024 प्रतियोगिताओं के परिणाम

निबंध प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री विक्की कुमार, तकनीकी अधिकारी–ए

द्वितीय पुरस्कार : श्री निखिल कुमार पाली, वैज्ञानिक–ई

तृतीय पुरस्कार : श्री सुमित खंडेलवाल, तकनीकी अधिकारी–ए

विशेष पुरस्कार : श्री कुंदन कुमार झा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक–बी

सुलेख प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री मो. जुनेद अंसारी, वैज्ञानिक–ई

द्वितीय पुरस्कार : श्री ज़की अनवर, वैज्ञानिक–डी

तृतीय पुरस्कार : श्री रवि रंजन गुप्ता, वैज्ञानिक–बी

विशेष पुरस्कार : श्री आशीष कुमार, वैज्ञानिक–ई

अनुवाद प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री रवि रंजन गुप्ता, वैज्ञानिक–बी

द्वितीय पुरस्कार : श्री प्रभात कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक–बी

तृतीय पुरस्कार : श्री संतोष कुमार मीणा, वैज्ञानिक–बी

आशुभाषण प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री शलभ मेहता, वैज्ञानिक–एफ

द्वितीय पुरस्कार : श्री अभिषेक कुमार झा, तकनीकी अधिकारी–ए

तृतीय पुरस्कार : श्री रवि रंजन गुप्ता, वैज्ञानिक–बी

विशेष पुरस्कार : श्री भुवनेश्वर प्रसाद, तकनीशियन–सी

निबंध प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री मो. इमाम, एस आर एफ

द्वितीय पुरस्कार : श्री संजीव रूद्रजीत रॉय, तकनीशियन–बी

तृतीय पुरस्कार : श्री एस रामू, तकनीकी अधिकारी–ए

सुलेख प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री विशाल सुनिल डंके, तकनीशियन–ए

द्वितीय पुरस्कार : डॉ सौमिका मुंशी, वैज्ञानिक–एफ

तृतीय पुरस्कार : श्रीमती शिवलिला एम एस, तकनीकी अधिकारी–ए

विशेष पुरस्कार : श्रीमती के अन्नपूर्णा, वैज्ञानिक–ई

अनुवाद प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री राजेश कुमार साहू, तकनीकी अधिकारी–ए

द्वितीय पुरस्कार : श्री एस रामू, तकनीकी अधिकारी–ए

तृतीय पुरस्कार : श्री जगदीश पाणि, तकनीकी अधिकारी–ए

आशुभाषण प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्रीमती जे गायत्री, निजी सचिव

द्वितीय पुरस्कार : श्री संजीव रूद्रजीत रॉय, तकनीशियन–बी

तृतीय पुरस्कार : डॉ सौमिका मुंशी, वैज्ञानिक–एफ

विशेष पुरस्कार : श्री जी सुरेन्दर, तकनीकी अधिकारी–ए

श्रुतलेख प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री जयकिशन यादव, प्रशासनिक सहायक–बी

द्वितीय पुरस्कार : श्री आकाश गौतम, वरिष्ठ तकनीकी सहायक–बी

तृतीय पुरस्कार : श्री रवि रंजन गुप्ता, वैज्ञानिक–बी

श्रुतलेख प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री बोंद्रे बालाजी महादेव, तकनीशियन–ए

द्वितीय पुरस्कार : श्रीमती मुनमुन चक्रवर्ती, भंडार सहायक–ए

तृतीय पुरस्कार : श्रीमती जे गायत्री, निजी सचिव

टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री जयकिशन यादव, प्रशासनिक सहायक–बी

द्वितीय पुरस्कार : श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक–बी

तृतीय पुरस्कार : श्री अभिषेक कुमार झा, तकनीकी अधिकारी–ए

टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री राजेश कुमार साहू, तकनीकी अधिकारी–ए

द्वितीय पुरस्कार : श्रीमती मुनमुन चक्रवर्ती, भंडार सहायक–ए

तृतीय पुरस्कार : श्री पी चंद्रकांत, तकनीशियन–ए

कविता पाठ प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री रजत, कोर्पोरेल

द्वितीय पुरस्कार : श्री टी गोविंद सिंह, प्रशासनिक अधिकारी

तृतीय पुरस्कार : श्री शलभ मेहता, वैज्ञानिक–एफ

विशेष पुरस्कार : श्री भुवनेश्वर प्रसाद, तकनीशियन–सी

कविता पाठ प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्रीमती मुनमुन चक्रवर्ती, भंडार सहायक–ए

द्वितीय पुरस्कार : श्रीमती एम स्वप्ना, वैज्ञानिक–ई

तृतीय पुरस्कार : श्री विशाल सुनील डंके, तकनीशियन–ए

विशेष पुरस्कार : श्री संजीव रूद्रजीत रॉय, तकनीशियन–बी

हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार :
1. श्री अभिषेक कुमार झा, तकनीकी अधिकारी–ए
2. श्री जी गौतम रेड्डी, वैज्ञानिक–ई

द्वितीय पुरस्कार :
1. श्री जय किशन यादव, प्रशासनिक सहायक–बी
2. श्री पी चंद्रकांत, तकनीशियन–बी

तृतीय पुरस्कार :
1. श्री निज़ाम मोहम्मद, प्रशासनिक सहायक–बी
2. श्री वी ईश्वर राव, प्रशासनिक सहायक–ए

गायन प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री राजकुमार पंडित, तकनीकी अधिकारी–ए

द्वितीय पुरस्कार : श्री आनंद प्रकाश पांडेय, तकनीकी अधिकारी–ए

तृतीय पुरस्कार : श्री विक्की कुमार, तकनीकी अधिकारी–ए

विशेष पुरस्कार : श्री विजय कुमार साव, वरिष्ठ तकनीकी सहायक–बी

गायन प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री देवाशीश नंदी, तकनीशियन–बी

द्वितीय पुरस्कार : श्री मानस कुमार बेहरा, तकनीशियन–ए

तृतीय पुरस्कार : श्री जगदीश पाणि, तकनीकी अधिकारी–ए

तकनीकी लेख प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री मो. इमरान, एसआरएफ

द्वितीय पुरस्कार: श्री मनीष नालमवार, वैज्ञानिक एफ

तृतीय पुरस्कार : श्री पबित्र बेहरा, तकनीशियन–ए

हिंदी टंकण प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री गौतम कुमार महतो, आशुलिपिक–।

द्वितीय पुरस्कार : श्री विकास कुमार, प्रशासनिक सहायक–बी

तृतीय पुरस्कार : श्री बिपीन कुमार, तकनीकी अधिकारी–ए

विशेष पुरस्कार : श्री निज़ाम मोहम्मद, प्रशासनिक सहायक–बी

तकनीकी लेख प्रतियोगिता (हिंदी वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री राजीव रंजन, प्रशासनिक सहायक–बी

द्वितीय पुरस्कार : श्री सुमित खंडेलवाल, तकनीकी अधिकारी–ए

तृतीय पुरस्कार : श्री अभिषेक कुमार झा, तकनीकी अधिकारी–ए

हिंदी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार : 1. श्रीमती दीप्ति नंदिता, तकनीकी अधिकारी–बी

2. श्री कमलेश सुरजमन यादव, तकनीशियन–ए

द्वितीय पुरस्कार : 1. श्री शलभ मेहता, वैज्ञानिक–एफ

2. श्री आनंद प्रकाश पांडेय, तकनीकी अधिकारी–ए

तृतीय पुरस्कार : 1. श्रीमती डी मोना, तकनीकी अधिकारी–ए

2. श्रीमती अमृता सिंह, वैज्ञानिक–एफ

हिंदी टंकण प्रतियोगिता (हिंदीतर वर्ग)

प्रथम पुरस्कार : श्री वी ईश्वर राव, प्रशासनिक सहायक–ए

द्वितीय पुरस्कार : श्री राजेश कुमार साहू, तकनीकी अधिकारी–ए

तृतीय पुरस्कार : श्री रामकृष्ण मर्रि, वरिष्ठ तकनीकी सहायक–बी

विशेष पुरस्कार : श्री पबित्र बेहरा, तकनीशियन–ए

दो दिवसीय द्वितीय अखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलनः उन्मेष–2025 का आयोजन

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय के डीआरडीओ (रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन), मुख्यालय और आरसीआई (अनुसंधान केंद्र इमारत) के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय द्वितीय अखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलनः उन्मेष–2025 का शुभारंभ विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आरसीआई के भव्य सभागृह में संपन्न हुआ। श्रीमती अंशुली आर्या, आईएएस, सचिव, राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, बतौर मुख्य अतिथि और डॉ. समिर वी. कामत, सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ विशिष्ट अतिथि थे।

राष्ट्रगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात् डीआरडीओ गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि और उपस्थित अतिथियों ने दीप प्रज्वलित किया। सरस्वती वंदना गीत पर कुमारी तन्मयी ने सुंदर नृत्य किया। मास्टर

वेद प्रज्ञान और मास्टर वेदा कार्तिकेय ने अपनी मधुर वाणी में प्रार्थना गीत प्रस्तुत किया। सभी अतिथियों का सुंदर पौधों से स्वागत किया गया।

आरसीआई के विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक श्री अनिंद्य बिस्वास ने स्वागत भाषण में देशभर से पधारे शोध प्रस्तुतकर्ताओं को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि डीआरडीओ मुख्यालय ने इस बार आरसीआई को द्वितीय अखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलन करने की जिम्मेदारी सौंपी है। सम्मेलन में विचार-विमर्श से हिंदी के कार्यों को बल मिलेगा।

उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय (डीपीआरओ एंड एम) श्री सुनील शर्मा ने सम्मेलन का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्मेलन का पहला आयोजन पिछले वर्ष सीवीआरडीई, चैन्नई में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ था। यह मुख्यालय एवं प्रयोशाला का संयुक्त प्रयास है। हिंदी के प्रति जागरूकता तथा प्रौद्योगिकी के लिए हिंदी को एक व्यापक मंच प्रदान करना इसका मुख्य उद्देश्य है। हिंदी भाषा ही नहीं, हमारी संस्कृति है जिसमें पूरे राष्ट्र को जोड़ने की शक्ति निहित है। आज विश्व स्तर पर हिंदी की पहचान है। यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि 30-35 से अधिक हिंदी पत्रिकाएं संपूर्ण विश्व में प्रकाशित हो रही हैं। हिंदी ही नहीं देश की सभी 22 संविधान स्वीकृत भाषाएँ सशक्त हैं। इस सम्मेलन में प्रस्तुत शोध पत्रों की भाषा सरल है जो हर श्रोता के लिए आसानी से समझने योग्य है। उन्होंने राजभाषा की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ज़्यादा से ज़्यादा काम हिंदी में करें। जल्दी ही हमारे शोध की भाषा हिंदी होगी।

इस अवसर पर सम्मेलन की स्मारिका के दोनों भागों का विमोचन मुख्य अतिथि श्रीमती अंशुली आर्या ने किया। आरसीआई के 'इमारत' पत्रिका के द्वितीय तकनीकी अंक का विमोचन और देशभक्ति गीतों की सीडी का विमोचन मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि और मंच पर उपस्थित अतिथियों द्वारा किया गया।

विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एमएसएस) श्री यू. राज बाबू ने बहुत ही सहज और परिमार्जित भाषा में संबोधित करते हुए कहा कि हमारा देश बहुत ही तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। हमें आगे बढ़ने के लिए समय के साथ चलना बहुत ज़रूरी है। डीआरडीओ द्वारा तकनीकी शब्दावली का प्रकाशन भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण कदम है। जितने भी विकसित देश हैं, वे अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं, हमें भी अपनी भाषाओं के विकास पर बल देना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि डॉ. समिर वी कामत, सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। डीआरडीओ प्रशासनिक कार्यों में हिंदी को बढ़ाने का कार्य निरंतर कर रहा है। आज के इस सम्मेलन के लिए 175 शोध पत्र प्राप्त होना एक उपलब्धि मानी जाएगी। मैं इसके लिए सभी शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ताओं को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। इस सम्मेलन की शुरूआत दक्षिण से की गई है जिसका उद्देश्य था हिंदीतर क्षेत्र में हिंदी का प्रसार करना है। इस सम्मेलन का विषय 'सतत् विकास के लिए विज्ञान' भी महत्वपूर्ण है। हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मान देने के लिए इस सम्मेलन में तेलुगु के शोध पत्र भी अच्छी संख्या में प्राप्त हुए हैं। इन सम्मेलनों के माध्यम से डीआरडीओ द्वारा हिंदी के प्रसार को नई दिशा और मार्गदर्शन देने का सफल प्रयास हो रहा है।

श्री चंद्र प्रकाश मीणा, अपर निदेशक, डीपीआरओ एंड एम ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि श्रीमती अंशुली आर्या के मार्गदर्शन में राजभाषा विभाग ने लगातार कई महत्वपूर्ण कार्य किए है, चाहे वह राष्ट्रीय स्तर हिंदी दिवस का आयोजन हो या अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विकास। साथ ही डीआरडीओ के लिए उनके स्नेह की भी चर्चा की। उन्होंने 14 सितंबर, 2024 को भारतीय भाषाओं के विकास के लिए एक विभाग की स्थापना की है जो अत्यंत ही सराहनीय कार्य है। डीआरडीओ राजभाषा के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। श्रीमती अंशुली आर्या ने अपने संबोधन में कहा कि बड़े ही हर्ष की बात है कि डीआरडीओ ने पिछले वर्ष की ही तरह इस वर्ष भी इस सम्मेलन का सफल आयोजन कर एक प्रतिमान स्थापित किया है। इस सम्मेलन से हिंदी के साथ-साथ भारतीय

भाषाओं के विकास को भी बल मिल रहा है। उन्होने कहा कि डीआरडीओ के लोगों का संदेश बहुत सटीक है यानी आधार है, हमारे वेदों और उपनिषदों में कही गई बातें यथार्थ पर आधारित हैं। डीआरडीओ में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। स्वतंत्रता के आंदोलन में भी हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विभिन्न भाषाओं से कितनें ही शब्द हिंदी में आकर समाहित हो चुके है। इंटरनेट जैसे शब्द हिंदी के शब्द बन गए हैं, उन्हें आत्मसात कर उपयोग करें। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि और मंच पर उपस्थित अतिथियों का शॉल और स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। श्री काज़िम अहमद, सहायक निदेशक (राजभाषा) और श्रीमती दिव्या नायर ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। डॉ एम के गुप्ता, वैज्ञानिक-जी एवं सह-संयोजक, उन्मेष-2025 ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। अल्पाहार के बाद सत्रों का आरंभ हुआ, जिसे सात सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम चार सत्र प्रथम दिवस पर संचालित किए गए। रात्रि सात बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन संपन्न हुआ।

राजभाषा पक्ष समापन एवं हिंदी दिवस समारोह भव्यता के साथ संपन्न

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ), रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की प्रयोगशाला अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद में दिनांक 18.10.2024 को राजभाषा पक्ष समापन, हिंदी दिवस के साथ हिंदी राजभाषा की हीरक जयंती का समारोह आरसीआई के निदेशक श्री अनिंद्य बिस्वास, विशिष्ट वैज्ञानिक की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक एवं भव्यता के साथ संपन्न हुआ। यह समारोह दो चरणों में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमती बेला, उप निदेशक हिंदी शिक्षण योजना एवं केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, हैदराबाद, श्री अनिंद्य बिस्वास, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आरसीआई, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, डॉ पी अनिल कुमार, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष, सदस्य सचिव डॉ. एम के गुप्ता, राजभाषा प्रभारी काज़िम अहमद, सहायक निदेशक (राजभाषा) के मंच पर स्वागत से हुआ। तत्पश्चात् निदेशक एवं मंचासीन अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित किया और मंच संचालक सूरज कुमार पाण्डेय ने अपनी मधुर वाणी में वंदना प्रस्तुत की। आर सी आई की वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों से संबंधित हिंदी में निर्मित वीडियो भी प्रस्तुत किया गया।

सभा का स्वागत करते हुए काज़िम अहमद, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी दिवस के मनाए जाने के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए प्रयोगशाला की गत वर्ष में हुई राजभाषा गतिविधियों से संबंधित संक्षित रिपोर्ट प्रस्तुत की और सभा को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलवाई। इसके पश्चात् गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार और अध्यक्ष, डीआरडीओ द्वारा प्राप्त संदेशों का वाचन वैज्ञानिक-ई, मदनलाल कसौटिया जी ने किया।श्री अनिंद्य बिस्वास, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं आरसीआई के निदेशक ने अपने संभाषण में सभी को हिंदी दिवस एवं हिंदी राजभाषा के 75 वर्ष पूर्ण होने पर राजभाषा के हीरक जयंती की शुभकानाएं दी। उन्होंने हिंदी के संवैधानिक पहलुओं के साथ इसके साहित्यिक पक्ष में भी चर्चा की तथा उन्होने हिंदी की सरसता को बताते हुए कबीरदास जी के दोहे का भी संदर्भ दिया साथ ही निदेशक महोदय ने सभागृह में उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों को 10-11 जनवरी 2025 को आरसीआई में आयोजित होने वाली द्वितीय अखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलन-'उन्मेष-2025' के विषय में भी अवगत कराया। डॉ. एम के गुप्ता, वैज्ञानिक जी एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने संबोधन में हिंदी दिवस की सभी को शुभकामनाएं दी और तथा सभागृह में उपस्थित सभी कार्मिकों के हिंदी के उत्साह की सराहना की तथा तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी बहुतायत प्रयोग हेतु प्रेरणा दी। इसके पश्चात डॉ. पी अनिल कुमार, निदेशक प्रबंध सेवाएँ एवं उपाध्यक्ष ने प्रशासन प्रभाग में हिंदी में किए जा रहे कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की अपील की। इसके पश्चात समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती बेला, उप निदेशक हिंदी शिक्षण योजना एवं वेंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, हैदराबाद ने अपने संबोधन में सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए बताया कि हिंदी एक

लोकप्रिय भाषा है तथा अपने अनुभव को साझा करते हुए आरसीआई में हो रहे हिंदी के कार्य्यो की अन्य सरकारी कार्योलयों एवं उपक्रमों की तुलनात्मक गतिविधियों में सराहना की।

इसके बाद राजभाषा पक्ष के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। राजभाषा पक्ष के दौरान कुल बारह प्रतियोगिताएं–निबंध, सुलेख, अनुवाद, आशुभाषण, श्रुतलेख, हिंदी टंकण, हिंदी प्रश्नोत्तरी, कविता–पाठ, गायन, अंत्याक्षरी, तकनीकी लेख, टिप्पणी एवं मसौदा आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं को हिंदी एवं हिंदीतर वर्गों में आयोजित किया गया जिनमें प्रयोगशाला के वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिताओं के निर्णायकों और आयोजकों को भी उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। श्रीमती जी विजय दुर्गा, वैज्ञानिक–जी, डॉ. विशाल कुमार, वैज्ञानिक–एफ, डॉ. एम वेंकट गुप्ता, वैज्ञानिक–'जी', श्री संतोष कुमार सतनामी, वैज्ञानिक–'एफ', श्री संजय कुमार गुप्ता, संयुक्त निदेशक (प्रशासन), श्री अजय कुमार मिश्रा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री एमएम जय बाबू, वरिष्ठ लेखा अधिकारी–1, डॉ. रवि चंद्रा, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, सिकन्दराबाद, डॉ. शीला बालाजी, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लिटिल फ्लावर डिग्री कॉलेज, श्री किरण केसकर, सहायक निदेशक (राजभाषा), डॉ अर्चना पाण्डेय, सहायक निदेशक (राजभाषा), काज़िम अहमद, सहायक निदेशक (राजभाषा), श्रीमती शुभ्रा मोहंतो, संगीत शिक्षिका, श्रीमती दिव्या नायर, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी एवं श्री सूरज कुमार पाण्डेय, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने प्रतियोगिताओं के निर्णायकों की भूमिका अदा की। इसके साथ हिंदी गृह पत्रिका एवं अखिल भारतीय संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगोष्ठी हेतु लेख लिखने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

दूसरे चरण में रंगारंग एवं मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत बॉलीवुड़ के सुपरहित गीत, सेक्सोफोन वादन एवं नृत्य प्रस्तुत किये गए। इस उपलक्ष्य में एक कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसका संचालन श्री काज़िम अहमद ने किया। प्रयोगशाला के प्रतिभाशाली कवियों ने अपनी स्वरचित कविताएं बहुत ही मनमोहक शैली में प्रस्तुत कीं। इन कवियों में श्री गोविंद अक्षय, श्री नीलांग त्रिवेदी, श्री शलभ मेहता एवं श्री रजत के नाम प्रमुख हैं। सभी कवियों ने विभिन्न रसों में उत्कृष्ट रचनाएं प्रस्तुत कीं। कवि सम्मेलन के पश्चात् गीत संगीत का कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्री काज़िम अहमद, श्री विक्की कुमार, देबाशीष नंदी ने सुपरहिट हिंदी गीत प्रस्तुत किए। इस गीत संगीत के कार्यक्रम में संगीत साधना की संचालिका एवं विख्यात गायिका श्रीमती शुभ्रा मोहांतो के साथ कल्पना डॉग एवं ऋचा चौधरी ने बहुत ही सुंदर गीत प्रस्तुत किए। इन सभी गायकों ने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम के मध्य में आरसीआई कलामंच द्वारा 'दूसरी क्रांति' नामक नाटक का भी मंचन किया गया जिसमें श्री शलभ मेहता, डॉ विशाल कुमार, श्री आनंद प्रकाश पाण्डेय, श्री कमलेश कुमार, श्री कुंदन कुमार, श्री गौतम कुमार महतो, श्री अभिषेक कुमार झा, श्री अशोक कुमार, श्री शशिकांत साहू, बिपिन कुमार तथा संजय कुमार दास नें इस नाटक के प्रमुख पात्रों के रूप में भाग किया। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले आयोजकों में राजभाषा प्रभाग के अतिरिक्त राजीव रंजन, विशाल कुमार, विशाल सुनील डंके, कुंदन कुमार झा, खुशाल गुढ़धे, विकास कुमार, विक्की कुमार, आदि नाम उल्लेखनीय है।

अंत में श्री गौतम कुमार महतो ने मंचासीन अतिथियों, विभिन्न प्रयोगशालाओं से पधारे अतिथियों, सभा में उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा समारोह के सफल आयोजन में सक्रिय रूप से योगदान देने वाले सभी आयोजकों के प्रति आभार प्रकट किया।

वार्षिक दिवस

वार्षिक दिवस

वार्षिक दिवस

अनुसंधान केंद्र इमारत

36
वाँ वार्षिक दिवस समारोह
14th SEPTEMBER 2024

वाहन

RESEARCH CENTRE IMARAT
36th

वार्षिक दिवस

प्रोत्साहन राशि का वितरण

हिंदी में डिक्टेशन : रु.5000/- की प्रोत्साहन राशि (दो पुरस्कार)
Dictation in Hindi : ₹.5000/- Incentive Amount (Two Prizes)

क्र.सं./ Sr No.	नाम (श्री)/ Name (Shri)	पदनाम/ Desg.
1.	अजय कुमार मिश्रा / Ajaya Kumar Mishra	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी / CAO
2.	संजय कुमार गुप्ता / Sanjay Kumar Gupta	संयुक्त निदेशक (प्रशासन) / JD (Admin)

प्रथम पुरस्कार : रु.5000/- की प्रोत्साहन राशि (दो पुरस्कार)
First Prize : ₹.5000/- Incentive Amount (Two Prizes)

क्र.सं./ Sr No.	नाम (श्री)/ Name (Shri)	पदनाम/ Desg.
1.	विकास कुमार / Vikas Kumar	प्रशासनिक सहायक–बी / AA-B
2.	राजीव रंजन / Rajiv Ranjan	प्रशासनिक सहायक–बी / AA-B

द्वितीय पुरस्कार : रु.3000/- की प्रोत्साहन राशि (तीन पुरस्कार)
Second Prize : ₹.3000/- Incentive Amount (Three Prizes)

क्र.सं./ Sr No.	नाम (श्री)/ Name (Shri)	पदनाम/ Desg.
1.	गौतम कुमार महतो / Gautam Kumar Mahto	आशुलिपिक– I / Steno-I
2.	वी ईश्वरराव / V Eswararao	प्रशासनिक सहायक–ए / AA-A
3.	निजाम मोहम्मद / Nizam Mohammad	प्रशासनिक सहायक–बी / AA-B

तृतीय पुरस्कार : रु.2000/- की प्रोत्साहन राशि (पाँच पुरस्कार)
Third Prize : ₹.2000/- Incentive Amount (Five Prizes)

क्र.सं./ Sr No.	नाम (श्री)/ Name (Shri)	पदनाम/ Desg.
1.	आकाश शर्मा / Akash Sharma	प्रशासनिक सहायक–बी / AA-B
2.	एम रविन्दर / M Ravinder	वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी– II / SAO-II
3.	जय किशन यादव / Jai Kishan Yadav	प्रशासनिक सहायक–बी / AA-B
4.	पी सीतारामुलु / P Seetharamulu	वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी– II / SAO-II
5.	अमुता थामस जयसीलन / Amrutha Thomas Jayaseelan	प्रशासनिक सहायक–ए / AA-A

पारंगत पाठ्यक्रम के परिणाम (जुलाई—नवंबर 2024)

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	प्राप्त अंक (200)	प्रतिशत
1.	संजीव कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी	173	86.5%
2.	राजेश कुमार साहू, तकनीकी अधिकारी-ए	164	82%
3.	प्रभात कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी	169	84.5%
4.	दीपक, तकनीशियन-ए	147	73.5%
5.	जयसिंह मीणा, तकनीशियन-ए	167	83.5%
6.	अमित कुमार जयसवाल, भंडार सहायक-बी	168	84%
7.	नायडू लोहित कुमार, तकनीकी अधिकारी-ए	152	76%
8.	विकास कुमार, प्रशासनिक सहायक-बी	166	83%
9.	विजय कुमार साव, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी	174	87%
10.	राजीव रंजन, प्रशासनिक सहायक-बी	170	85%
11.	दिव्यांश भार्गव, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी	163	81.5%
12.	बी लिंगास्वामी, तकनीकी अधिकारी-ए	155	77.5%
13.	सुमित खंडेलवाल, तकनीकी अधिकारी-ए	171	85.5%
14.	पंकज कुमार, तकनीशियन-ए	169	84.5%
15.	राहुल कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी	158	79%
16.	पवित्र बेहरा, तकनीशियन-ए	154	77%
17.	शशिकांत साहू, तकनीकी अधिकारी-ए	163	81.5%
18.	गौतम कुमार महतो, आशुलिपिक-।	163	81.5%
19.	आर राज लक्ष्मी, तकनीकी अधिकारी-सी	140	70%
20.	अनूप, वैज्ञानिक-ई	165	82.5%
21.	संतोष कुमार सतनामी, वैज्ञानिक-एफ	161	80.5%
22.	प्रवीण तिवारी, वैज्ञानिक-डी	154	77%
23.	अजय कुमार मिश्रा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी	146	73%
24.	अभिषेक जैन, वैज्ञानिक-डी	158	79%
25.	एस रवि किशोर, निजी सचिव	142	71%
26.	एम रविन्दर, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी-।।	144	72%
27.	नरेश गंधम, वैज्ञानिक-ई	162	81%
28.	के अन्नपूर्णा, वैज्ञानिक-ई	166	83%
29.	शिवानी गर्ग, वैज्ञानिक-एफ	170	85%
30.	जी गौतम राज, वैज्ञानिक-डी	166	83%
31.	ए ज्योति, तकनीकी अधिकारी-बी	171	85.5%
32.	गायत्री झुपड़ी, निजी सचिव	150	75%
33.	जे ऊषाबाला, निजी सचिव	157	78.5%
34.	ए भावना, निजी सचिव	150	75%

35.	अभिमन्यु कुमार, वैज्ञानिक-ई	166	83%
36.	शलभ मेहता, वैज्ञानिक-एफ	176	88%
37.	एम पुरुषोत्तम सागर, तकनीकी अधिकारी-ए	152	76%
38.	डॉ महेंद्र कुमार गुप्ता, वैज्ञानिक-जी	170	85%
39.	रमेश कुमार, वैज्ञानिक-एफ	175	87.5%
40.	अनिल कुमार प्रजापति, वैज्ञानिक-बी	154	77%
41.	प्रशांत कुमार श्रीवास्तव, वरि. तकनीकी सहा.-बी	164	82%
42.	एम एम जय बाबू, वरिष्ठ लेखा अधिकारी-।	151	75.5%
43.	सुदर्शन कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी	178	89%

मुख्यालय स्तर पर निरीक्षण

दिनांक 14/06/2025 को राजभाषा मुख्यालय की टीम द्वारा निरीक्षण किया गया, जिसमें हमारी प्रयोगशाला आरसीआई में राजभाषा नीति के तहत हो रहे कार्यो पर चर्चा की गई एवं उनका जायज़ा लिया तथा निरीक्षण टीम द्वारा आरसीआई में हो रहे राजभाषा से संबंधित उत्तम कार्यो की प्रशंसा की। निरीक्षण के दौरान हुए बैठक में प्रयोगशाला से श्री अनिद्य बिस्वास, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आरसीआई, डॉ. पी अनिल कुमार, डीओएमएस, श्री काज़िम अहमद, सहायक निदेशक(राजभाषा), श्री गौतम कुमार महतो, आशुलिपिक ग्रेड-।, श्री सूरज कुमार पाण्डेय, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी एवं श्री सुनील कुमार अग्निहोत्री, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी उपस्थित रहे।

वर्ष के दौरान आरसीआई में महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

भारत रत्न डा.बी.आर. अम्बेडकर की 134वीं जयंती का आयोजन

आरसीआई एससी/एसटी कर्मचारी कल्याण संघ द्वारा दिनांक 30/04/2025 को एक्सपोज़िशन हॉल में डॉ. अम्बेडकर की 134वी जयंती का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थे डॉ आर.एस. प्रवीण कुमार, आईपीएस कैडर के पूर्व एडीशनल डीजीपी, तेलंगाना। मुख्य अतिथि के अतिरिक्त मंच पर श्री अनिद्य बिस्वास, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आरसीआई, डॉ. पी अनिल कुमार, डीओएमएस, आरसीआई, श्री मदनलाल कसौटिया, वैज्ञानिक-ई एवं अध्यक्ष तथा श्री अमृत राव, महासचिव उपस्थित थे। सभी मंचासीन अतिथियों ने इस अवसर पर सभा को संबोधित किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024

आरसीआई में सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2024 का आयोजन 28 अक्तूबर 2024 से 03 नवंबर 2024 के दौरान किया गया। इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2024 का थीम था – 'राष्ट्रीय समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा की संस्कृति'। इस दौरान सतर्कता पर कार्यशालाएं, संगोष्ठी तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 14 नवंबर 2024 को एक नाटक का मंचन किया गया एवं कविता पाठ तथा पुरस्कार वितरण के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह को भव्य रूप से संपन्न किया गया। दिनांक 28.10.2024 को सभी संबंधित समूहों/निदेशालयों/परियोजनाओं के सतर्कता अधिकारियों ने कार्मिकों को सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा दिलायी।

डीआरडीओ दिवस समारोह

आरसीआई में डीआरडीओ दिवस समारोह का आयोजन 03 जनवरी 2024को आरसीआई सभागृह में किया गया। वंदना एवं दीप प्रज्वलन के पश्चात लाइव वेबकास्ट के माध्यम से डॉ. समीर वेंकटपति कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी तथा अध्यक्ष, डीआरडीओ ने सभा को संबोधित किया। तत्पश्चात उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आरसीआई श्री अनिंद्य बिश्वास ने डीआरडीओ दिवस के अवसर सभी को शुभकामनाएं देते हुए सभा को संबोधित किया। उन्होंने अपने वैज्ञानिकों तथा तकनीकी संवर्ग के प्रति विश्वास जताते हुए आगे भी परियोजनाओं में अग्रणी भूमिका निभाने को कहा। इसके पश्चात् समूह निदेशकों

ने भी विगत वर्ष के दौरान विभिन्न परियोजनाओं की उपलब्धियों तथा आगामी योजनाओं और परियोजनाओं की चुनौतियों के बारे में बताया।

54वां राष्ट्रीय सुरक्षा अभियान कार्यक्रम

आरसीआई में दिनांक 28 मार्च 2025 को एक्सपोज़िशन हॉल में 54 वां राष्ट्रीय सुरक्षा अभियान कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। जिसमें दीप प्रज्ज्वलन के साथ सुरक्षा फिल्म का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. दीपतेंदु दास, एसओ-जी एवं लीड इंस्पेक्टर, बीएआरसी मुख्य अतिथि वक्ता के तौर पर आमंत्रित थे और उन्होने कार्मिकों से अपने अनुभव साझा किए। तत्पश्चात उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आरसीआई श्री अनिंद्य बिश्वास ने राष्ट्रीय सुरक्षा अभियान कार्यक्रम के अवसर सभी को शुभकामनाएं देते हुए सभा को संबोधित किया तथा सभी से सुरक्षा मानकों का अनुपालन करने को भी कहा। पुरस्कार वितरण एवं धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आरसीआई में महिला दिवस समारोह

आरसीआई में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन 12 मार्च 2025 को किया गया। इस दौरान दैनिक जीवन मे महिलाओं के विभिन्न गुणों के साथ समर्पण भाव, चुनौतियों, धैर्य, कर्मठता, प्रेम भावना के बारे में चर्चा-परिचर्चा की गई। इस दौरान कई खेल प्रतियोगिताओं तथा टीम निर्माण गतिविधियों का आयोजन किया गया।

वार्षिक दिवस समारोह

अनुसंधान केंद्र इमारत का 36वां वार्षिक दिवस 14 सितंबर 2024 को मनाया गया। इस समारोह में मंचासीन अतिथियों एवं सभी का स्वागत प्रबंध सेवा निदेशक डॉ. पी अनिल कुमार, डीओएमएस ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में डॉ. समीर वी. कामत, सचिव, डीडीआरएंडडी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ तथा विशेष अतिथि के रुप में श्री यू. राज बाबू, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक(एमएसएस) उपस्थित थे। मंचासीन अतिथियों ने सभा को संबोधित भी किया। इस अवसर पर डीआरडीओ में 25 वर्षों एवं 20 वर्षों की सेवा पूर्ण करने वाले कार्मिकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ।

मौसम की तरह बदलना नहीं आता

सुमित खंडेलवाल
तकनीकी अधिकारी-ए

लोग रूठ जाते हैं मुझसे,
और मुझे मनाना नहीं आता।

मैं चाहता हूँ क्या,
मुझे जताना नहीं आता।

आंसुओं को पीना पुरानी आदत है,
मुझे तो आंसू बहाना भी नहीं आता।

लोग कहते हैं मेरा दिल है पत्थर का,
इसलिए इसको पिघलना भी नहीं आता।

अब क्या कहूँ मैं,
क्या आता है, क्या नहीं आता।

बस मुझे मौसम की तरह,
बदलना नहीं आता।

आपदा प्रबंधन

गौतम कुमार महतो
आशुलिपिक-।

भारत एक विशाल देश है। क्षेत्रफल की दृष्टि से दुनिया का 7वां सबसे बड़ा देश है। भारत में भौगोलिक विविधताएँ भी हैं जैसे कहीं ऊँचे-ऊँचे पहाड़ तो कहीं घने जंगल तो कहीं दलदली जमीन या फिर विशाल समुद्र या लबीं नदियाँ। इन सबसे उत्पन्न होने वाली आपदाएं या मानव निर्मित आपदाएं इस देश में एक बहुत बड़ी समस्या है। आपदा प्रबंधन इन विषम परिस्थितियों में लिया जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम है। जिसमें प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं के प्रभावों को कम करने के लिए योजना बनाना और उनसे उबरना शामिल है। यह जीवन, संपत्ति, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। भारत अपनी विविध भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के कारण विभिन्न प्रकार की आपदाओं के प्रति संवेदनशील है। जिससे प्रभावी आपदा प्रबंधन की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

आपदाओं को हम मुख्यतः दो श्रेणी में रख सकते हैं पहला प्राकृतिक एवं दूसरा मानव निर्मित।

प्राकृतिक आपदाएं: ये प्राकृतिक घटनाओं के परिणामस्वरूप होती हैं जैसे कि भूकंप, बाढ़, सूखा, चक्रवात, सुनामी, भूस्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट, हिमस्खलन, लू एवं शीतलहर, जंगल की आग इत्यादि।

मानव निर्मित आपदाएँ : ये मानव द्वारा किए गए विभिन्न प्रकार के गतिविधियों से उत्पन्न होती है जैसेकि औद्योगिक दुर्घटनाएँ, आग, परिवहन दुर्घटनाएँ, भगदड़, पर्यावरणीय प्रदूषण इत्यादि।

आपदा के रोकथाम हेतु कई प्रक्रिया शामिल है जिसमें विभिन्न चरण होते हैं।

रोकथाम

सार्वजनिक जागरूकता एवं शिक्षा कार्यक्रम
जोखिम मूल्यांकन और मानचित्रण
पर्यावरण संरक्षण और सतत् विकास
सार्वजनिक जागरूकता और शिक्षा कार्यक्रम

तैयारी

आपदा प्रबंधन योजनाएँ विकसित करना
संचार और चेतावनी प्रणालियों की स्थापना
आश्रय स्थलों की पहचान और व्यवस्था
आवश्यक वस्तुओं और उपकरणों का भंडारण
अभ्यास और मॉक ड्रिल आयोजित करना

प्रतिक्रिया

खोज और बचाव अभियान
घायलों को प्राथमिक चिकित्सा और चिकित्सा सहायता प्रदान करना
प्रभावित लोगों को भोजन, पानी, आश्रय और अन्य आवश्यक सहायता प्रदान करना
संचार लाइनों को बनाए रखना
कानून और व्यवस्था बनाए रखना

पुनर्प्राप्ति

पुनर्निर्माण और मरम्मत
आजीविका बहाली
आर्थिक पुनरुद्धार
पिछली आपदाओं से ली गई सीख

भारत में आपदा प्रबंधन के लिए सरकार ने कई प्रकार की संस्थाओं की स्थापना की है जैसेकि राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण। यह आपदा प्रबंधन नीतियों, योजनाओं और दिशा-निर्देशों के लिए शीर्ष निकाय है।

राज्य स्तर की बात करें तो राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण यह राज्य में आपदा के समय सभी प्रकार के निदानों हेतु कार्य करते हैं। ऐसे ही हर जिले में आपदाओं से निपटने हेतु सरकारी निकाय होते हैं यह जमीनी स्तर पर प्रतिक्रिया एवं समन्वय के लिए जिम्मेदार होते हैं। इसके अलावा विशिष्ट प्रकार की आपदाओं के लिए विभिन्न नीतियाँ और दिशानिर्देश मौजूद हैं।

आपदा प्रबंधन में प्रौद्योगिकी की भूमिका : प्रौद्योगिकी आपदा प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जैसे कि दूरसंचार, भौगोलिक सूचना प्रणाली और रिमोट सेंसिंग, मौसम पूर्वानुमान, अर्ली वार्निंग सिस्टम, डेटा विश्लेषण एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सोशल मीडिया आदि।

आपदा प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी अहम होती है। स्थानीय समुदायों को जोखिमों और उनसे बचाव के तरीकों के बारे में जागरूक करना आवश्यक है। उन्हें प्राथमिक प्रतिक्रिया टीमों में प्रशिक्षित किया जा सकता है और आपदा प्रबंधन के विविध पहलुओं में उनको जोड़ा जा सकता है।

चुनौतियाँ

जनसंख्या घनत्व और शहरीकरण का बढ़ता दबाव
जलवायु परिवर्तन
अपर्याप्त वित्तीय संसाधन
विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय की कमी

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए आपदा प्रबंधन में निरंतर निवेश, क्षमता निर्माण, बेहतर समन्वय और प्रौद्योगिकियों का प्रभावी उपयोग पर आवश्यक रूप से ध्यान देने की जरूरत है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन और जोखिम कम करने के उपायों को मुख्यधारा में लाना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

आपदा प्रबंधन एक सतत् और जटिल प्रक्रिया है जिसके लिए सरकार, समुदायों और व्यक्तियों के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। प्रभावी आपदा प्रबंधन न केवल जीवन और संपत्ति की रक्षा करता है बल्कि सतत् विकास और राष्ट्रीय प्रगति में भी योगदान देता है। भारत को अपनी भौगोलिक एवं सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक मजबूत और लचीली आपदा प्रबंधन प्रणाली विकसित करने के लिए लगातार प्रयास करने की आवश्यकता है। जागरूकता, तैयारी और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से हम आपदाओं के विनाशकारी प्रभावों को काफी हद तक कम कर सकते हैं और एक सुरक्षित भविष्य बना सकते हैं।

मां का पल्लू

रामभरोस झाखड़
तकनीशियन-ए

कुछ दशक पहले के लोगों को मां के पल्लू की खूब याद होगी। पल्लू क्या होता है, इसकी अहमियत मां और बच्चे के लिए क्या होती थी, यह आज कम लोग समझेंगे क्योंकि अब मां के परिधान में साड़ी के अलावा भी कई परिधान जुड़ गए हैं।

मां का पल्लू, हमें लगता है कि मां को गरिमामय छवि प्रदान करने के लिए था, लेकिन इसके साथ ही इसके साथ इसके कई और उपयोग थे। यह गर्म बर्तन को चुल्हे से हटाते समय उसको पकड़ने के काम भी आता था।

पल्लू की बात ही निराली थी, पल्लू बच्चों का पसीना, आंसु पोंछने के साथ ही मुँह की सफाई के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था। माँ इसको अपने हाथों के लिए तौलिए के रूप में भी इस्तेमाल कर लेती थी। खाना खाने के बाद माँ के पल्लू से मुँह साफ करने का अपना ही आनंद होता था यह हर बच्चे को याद होगा।

कभी आँख में दर्द होने पर माँ अपने पल्लू को गोल बनाकर, फूंक मारकर, गर्म करके पलक पर लगा देती थी, दर्द उसी समय गायब हो जाता था।

माँ की गोद में सोने वाले बच्चों के लिए उसकी गोद गद्दा और उसका पल्लू चादर का काम करते थे।

जब भी कोई अनजान घर पर आता तो बच्चे उनकी माँ के पल्लू की ओट लेकर देखते थे। जब भी बच्चे को किसी बात पर शर्म आती, वो पल्लू से अपना मुँह ढककर छुप जाता था और जब बच्चों को बाहर जाना होता तब माँ का पल्लू एक मार्गदर्शक का काम करता था। जब तक बच्चे ने हाथ में पल्लू का सिरा थाम रखा होता, तो सारी कायनात उसकी मुट्ठी में होती।

जब मौसम ठंडा होता था, माँ उसको अपने चारों ओर लपेटकर ठंड से बचने की कोशिश करती।

पल्लू एप्रन का भी काम करता था। पल्लू यानि दामन का उपयोग पेड़ों से गिरने वाले जामुन और मीठे संगंधित फलों को लाने के लिए किया जाता था। पल्लू घर में रखे सामान से धूल हटाने में भी बहुत सहायक होता था।

पल्लू में गांठ लगाकर माँ एक चलता फिरता बैंक या तिजोरी साथ रखती थी और अगर सबकुछ ठीक रहा तो कभी उस बैंक से कुछ पैसे भी मिल जाते थे। मुझे नहीं लगता कि विज्ञान इतनी तरक्की करने के बाद भी पल्लू का विकल्प ढूंढ पाया है। पल्लू कुछ और नहीं बल्कि एक जादुई अहसास है।

राजभाषा पखवाड़ा

अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

अनुसंधान केन्द्र इमारत (आरसीआई)

डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम प्रक्षेपास्त्र समष्टि

पी. ओ. विज्ञान कांचा, हैदराबाद. - 5000 069